चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, युगाब्द 5127, दिसम्बर 2025

भारत की एकता व अखंडता का राष्ट्रीय गीत

वंदे मातरम् 150वी वर्षगाँठ

'भारत एक हिंदू राष्ट्र है'

बेंगलुरु व्याख्यानमाला में भागवत जी ने बताया 'हिंदू होने का अर्थ और उसकी जिम्मेदारी'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि भारत एक हिंदू राष्ट्र है और हिंदू होने का अर्थ है —समाज को एक सूत्र में बांधना और देश के प्रति जिम्मेदारी का निर्वहन करना। वे बेंगलुरु में संघ के शताब्दी वर्ष पर आयोजित व्याख्यानमाला में संबोधित कर रहे थे।

मुस्लिम और क्रिश्चियन को भ्रम में रखा गया : डॉ. भागवत जी ने कहा कि मुस्लिम और क्रिश्चियन समाज को जानबूझकर यह विश्वास दिलाया गया है कि वे हिंदुओं से अलग हैं, जबकि सबके पूर्वज समान हैं और पारंपरिक चिंतन भी एक जैसा है। उन्होंने बताया कि उन्हें कई मुस्लिम और क्रिश्चियन ऐसे मिले हैं जो अपना गोत्र बताते हैं —जो समान सांस्कृतिक मूल का प्रमाण है।

शताब्दी वर्ष के अंतर्गत आयोजित व्याख्यानमाला : सरसंघचालक जी संघ के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय (8 एवं 9 नवंबर) व्याख्यानमाला को संबोधित कर रहे थे। यह आयोजन बनशंकरी स्थित पीईएस विश्वविद्यालय, होसाकेरेहल्ली रिंग रोड, बेंगलुरु में किया गया। पहले दिन विभिन्न राज्यों के लगभग 1,200 प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ वंदे मातरम् से हुआ।

'भारत एक हिंदू राष्ट्र'-जिम्मेदारी और एकता पर बल : भागवत जी ने कहा कि हिंदू होना केवल पहचान नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। भारत की विविधता उसकी सुंदरता है, और इस विविधता में एकता ही हमारी सच्ची शक्ति है। उन्होंने कहा —'बीइंग हिंदू, आय रिस्पॉन्सिबल फॉर भारत।' संघ का कार्य समाज को एक सूत्र में बांधना और राष्ट्रीय चेतना को सशक्त करना है।

संघ का विरोध और समाज का विश्वास : भागवत जी ने कहा कि वर्षों से संघ के विरोध में बहुत कुछ कहा गया, परंतु वह विरोध केवल मुख से रहा, दिलों में नहीं। समाज में जब हम निकले, तो कोई वास्तविक विरोधी नहीं मिला। उन्होंने कहा – 'हम सेवा के लिए आए हैं और आज समाज इस पर विश्वास करने लगा है।' उन्होंने यह भी कहा कि विरोधी भी हमारे लिए उपयोगी हैं, जैसे कबीरदास जी ने कहा – 'निंदक नियरे राखिए।'

संघ का स्वरूप और इतिहास : संघ के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए सरसंघचालक जी ने कहा कि यह संस्था अद्वितीय है, जिसकी तुलना किसी अन्य संगठन से नहीं की जा सकती। संघ किसी प्रतिक्रिया से नहीं जन्मा। वर्ष 1857 की क्रांति के बाद यह विचार उठा कि थोड़े लोग हम पर शासन क्यों कर रहे हैं। इसी चिंतन के क्रम में डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने 1916-17 में प्रयोग प्रारंभ किए और 1925 में संघ का औपचारिक रूप सामने आया। वर्ष 1939 तक कार्यकर्ताओं ने इसे एक सिद्ध संगठनात्मक मॉडल के रूप में स्थापित कर दिया।

व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण : भागवत जी ने कहा कि व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र – दोनों का विकास आवश्यक है। इसी भावना से शाखा की परंपरा प्रारंभ हुई, जिसमें एक घंटे के अभ्यास से व्यक्ति और समाज दोनों का निर्माण होता है।

शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम और उद्देश्य : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 02 अक्टूबर 2025 को अपने 100 वर्ष पूर्ण करेगा। इस अवसर पर देशभर में व्याख्यानमालाएं, युवा सम्मेलन, सामाजिक सद्भाव कार्यक्रम और संवाद शृंखलाएं की जा रही हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में जोड़ना और 'एक भारत – अखंड भारत' की भावना को सशक्त करना है।◆◆◆

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिलें संस्कार

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 12 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5127, दिसम्बर 2025

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

संरक्षक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सह सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹ 150
आजीवन शुल्क	₹ 1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णतः अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

इस अंक में...

संपादकीय	वंदे मातरम : राष्ट्रीय चेतना का अमर मंत्र	5
चिन्तन	शिक्षा एवं चरित्र निर्माण	6
प्रेरक प्रसंग	आप कितने भाग्यशाली हैं	7
आवरण	वंदे मातरम : भारतीय विरासत और स्वाभिमान...	8
	भारतीय अस्मिता एवं स्व गौरव का राष्ट्रगीत	10
	भारत की आत्मा का गौरव गान	12
महिला जगत्	रेणुका सिंह ठाकुर के स्विंग में झूमा भारत	13
संगठनम्	क्रिएट फॉर द नेशन कार्यक्रम...	15
देवभूमि	देवभूमि हिमाचल में बढ़ते अपराध	18
देश प्रदेश	आकाश की ऊंचाइयों पर आत्मनिर्भर भारत	19
युवा पथ	कबड्डी विश्व कप में हिमाचल की पांच बेटियां	20
नवाचार	मंडी के कर्ण सिंह क अनौखी पहल	21
धर्म जागरण	सन्त-सिपाही गरू गोबिन्द सिंह	22
	मुस्लिम पक्ष द्वारा कोर्ट की अवमानना	23
स्वास्थ्य	अम्लपित्त का आयुर्वेदिक उपचार	24
व्यक्तित्व	सरदार वल्लभभाई पटेल का राष्ट्र निर्माण	25
पुण्य स्मरण	संकल्पनिष्ठ तपस्वी	26
लोक संस्कृति	चम्बा का समृद्ध लोक गायन मुसाधा	27
पंच परिवर्तन	स्वदेशी कर रही विदेशी तकनीक से मुकाबला	28
कृषि	सेब की बम्पर पैदावार से किन्नौर सर्वश्रेष्ठ...	30
काव्य जगत्	बचपन के निशां...	31
विश्व दर्शन	भारत की सामरिक ताकत से घबराया पाक	32
विविध	देश ने खोया बहादुर विंग कमांडर नमांश	33
बाल जगत्	सनातन की एकता का आदर्श शिव परिवार	34
धर्म ध्वज	श्रीराम मंदिर के शिखर पर फहराया धर्म ध्वज	35

अमृत वचन

स्वार्थ का अंत : सबसे बड़ा सुख और शांति तब मिलती है
जब आप अपने भीतर से स्वार्थ को समाप्त कर देते हैं।
- गुरु गोबिन्द सिंह जी

पाठकीय...

महोदय,

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व में केंद्र सरकार ने विगत 11 वर्षों में अनेक ऐतिहासिक कार्य किए हैं - अमृत महोत्सव, धारा 370 को हटाना, काशी विश्वनाथ और अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण, वक्फ बिल में संशोधन, अहिल्याबाई होलकर, स्वामी दयानंद सरस्वती , भगवान बिरसा मुंडा जयंती समारोह और अब राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की 150 वीं वर्षगांठ पर विभिन्न कार्यक्रमों तथा डाक टिकट जारी करना राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाभिमान के प्रमाण हैं। पांच परिवर्तनों के अंतर्गत हर बार स्तरीय और जानकारी पूर्ण सामग्री पढ़ने को मिल रही है। जिससे यह ठीक प्रकार से जान पड़ता है कि संघ के माध्यम से समाज के लिए पांच परिवर्तनों का बहुत बड़ा महत्व है। पांच परिवर्तनों के सार को व्यक्तिगत जीवन में, परिवार और समाज में अपनाने से ही राष्ट्र समृद्ध और संपन्न हो सकता है। इसीलिए शताब्दी वर्ष में इन पांच परिवर्तनों की शिक्षा को जीवन में अपनाए जाने की जरूरत है। संपादक टोली को हम यह जरूर कहना चाहते हैं कि पत्रिका का स्तर कायम रहना चाहिए। इसकी सजावट और चित्र, डिजाइन बहुत अच्छे लग रहे हैं। पत्रिका को देखने और पढ़ने से एक अपनेपन का एहसास होता है और पत्रिका की सामग्री तथा साज-सज्जा भी आकर्षित करती है तथा अगले अंक का भी बेसब्री से इंतजार रहता है।

शकुन्तला देवी, शोघी, जिला शिमला, हि.प्र.

महोदय,

नवंबर 2025 का अंक मिला। हमेशा की तरह मातृ वंदना के माध्यम से अनेक विषयों को एक ही पत्रिका में पढ़ने का अवसर मिला। जिस स्पष्टता और सहजता से इस पत्रिका में आलेख, रचनाएं प्रकाशित होती हैं, वह अपने आप में खास है। इस सामग्री को पढ़ने से विभिन्न विषयों पर अच्छी जानकारी मिलती है।

वर्तमान में विभिन्न संगठन, अलग-अलग तरह की बोली बोलते हैं और हर कोई अपनी बात को सबसे मनवाना चाहता है। चाहे वह देश के विरुद्ध ही कोई विचार क्यों न हो। हमारे देश में हर किसी को भी स्वतंत्र विचार रखने और बोलने की पूरी आजादी है लेकिन अक्सर कुछ लोगों द्वारा इसका गलत फायदा उठाया जाता है। भारत माता को गाली देना, देश के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भला बुरा कहना, संघ की अकारण आलोचना करना, व्यक्तिगत जीवन में के बारे में गलत कहना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं कहा जा सकता है। इस दृष्टि से मातृ वंदना अपने पाठकों का सही मार्गदर्शन करती है।

जया शर्मा, कसुम्पटी, शिमला, हि.प्र.

महोदय,

मातृवंदना के मार्गशीर्ष अंक में संघ शताब्दी वर्ष देशभक्ति का शंखनाद काफी आकर्षक और जानकारी से भरपूर लगा। पथ संचलन के विभिन्न कार्यक्रमों में बच्चों, युवाओं, महिलाओं और वरिष्ठ स्वयंसेवकों की भागीदारी प्रेरणा प्रदान करने वाली रही। यही संगठन की ताकत भी है। इस अंक में व्यक्ति से राष्ट्र निर्माण की ओर का विवरण संघ की एक शताब्दी की यात्रा की उपलब्धियो की ओर संकेत करता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संघ की स्वर्णिम परंपरा के संबंध में अपने अनुभव और चिंतन को सांझा करके प्रेरणा प्रदान की है। पंच परिवर्तन के अंतर्गत स्व का बोध पर आधारित आलेख स्वदेशी, संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक जीवन की ओर संकेत करते हैं। यह विषय वर्तमान संदर्भ में महत्वपूर्ण है ताकि हम स्व के साथ अपने जीवन को जोड़ने का प्रयास कर सकें। राष्ट्र निर्माण में नारी शक्ति के रूप में राष्ट्रीय सेविका समिति का पथ संचलन पत्रिका का विशेष आकर्षण है। तिब्बत और भारत का सांझा स्वप्न मानसरोवर की मुक्ति एक स्तरीय, आवश्यक और सामयिकक चिंतन है, जो तिब्बत और भारत की मैत्री का एक सुदृढ़ आयाम भी है।

मीनाक्षी शर्मा, अर्की, जिला सोलन, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को
गीता जयन्ती की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस दिसम्बर 2025

गीता जयन्ती	01 दिसम्बर
दत्तात्रेय जयन्ती	04 दिसम्बर
अन्नपूर्णा जयन्ती	14 दिसम्बर
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	23 दिसम्बर
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	27 दिसम्बर

डॉ. कर्म सिंह
सम्पादक, मातृवन्दना

वंदे मातरम् - राष्ट्रीय चेतना का अमर मंत्र

संपादकीय

वंदे मातरम् का लेखन, इतिहास, परंपरा और 150 वर्षीय उत्सव भारत के सांस्कृतिक और स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस गीत की रचना बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 7 नवंबर 1875 को की थी, और 2025 में इसके 150 वर्ष पूर्ण हुए हैं। संस्कृत और बांग्ला के मिश्रण से लिखित तथा साहित्यिक पत्रिका %बंगदर्शन% में प्रकाशित और बाद में आनंद मठ में शामिल इस गीत में भारत माता के दिव्य स्वरूप का वर्णन करते हुए मां भगवती की आराधना किए जाने पर मुस्लिम समुदाय की द्वारा आपत्ति जताई गई और सोच विचार के बाद इसके प्रथम दो पद छंदों को गाने की शक्ति प्रदान की ईं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों और भारतीय जनता का प्रेरणास्रोत रहा, जिसने राष्ट्रीयता, एकता, त्याग और मातृभूमि के लिए भक्ति की भावना जागृत की। प्रधानमंत्री द्वारा स्मारक डाक टिकट व सिक्का जारी किया जाना इसके महत्व एवं लोकप्रियता का प्रमाण है। देवभूमि हिमाचल अपने दिव्यता अलौकिक सौंदर्य और हिमाचल वीडियो की परिश्रम ईमानदारी तथा राष्ट्र प्रेम के लिए प्रसिद्ध है यहां के सांस्कृतिक विरासत परंपराएं रीति रिवाज मेल पर्व त्यौहार जहां इसके समाज की जड़ों को मजबूत बनाए हुए हैं वहीं वर्तमान में सामाजिक विसंगतियों और बादल जीवन में बदलती परिस्थितियों तथा चिंतन के चलते हत्या लूटपाट बलात्कार की घटनाओं का बढ़ना चिंता का विषय बन चुका है।

लोकतंत्र की परंपरा में अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए बिहार की जनता ने एक बार फिर कमल का फूल खिलाया है और विकास तथा भारत की आत्मनिर्भरता पर अपनी मोहर लगाई है।

श्री राम मंदिर के शिखर पर धर्म राजा का फहराया जाना भारतीय अस्मिता सांस्कृतिक विरासत और संघर्ष पूर्ण यात्राओं का प्रतीक है इस पवित्र ध्वज पर सूर्य को विदर वृक्ष और ओमकार को अंकित किया जाना भगवान श्री राम की जीवंत मर्यादाओं और सूर्यवंश की परंपराओं का साक्षी है। यह साल खेल की दृष्टि सेभारतीय महिला खिलाड़ियों के लिए स्वर्णिमरहा है। पहले महिला क्रिकेट विश्व कप, फिर महिला विश्व विजेता र अब महिला कबड्डी में विश्व चैम्पियन का खिताब जीतकर भारत का गरव बढ़ाया है। भारत की कबड्डी टीम ने विश्व चैंपियनशिप जीतकर भारत का नाम ऊंचा किया है। इस कबड्डी टीम में कैप्टन सहित अन्य चार कबड्डी की प्लेयर्स खिलाड़ी हिमाचल प्रदेश की हैं। यह सब बेहतर सुविधाएओ, खेल भावना और दृड इच्छा शक्ति और देश का मस्तक ऊंचा करने की भावना का फल है।जब दर्को से खचाखच भरे स्टेडियम में जनगण मन राष्ट्रगान की गूंज सुनाई देती है और विजेता खिलाड़ी ट्राफी लेकर राष्ट्रध्वज लहराकर झूमते हैं तो सारा उनके साथ जीत का जश्न मनाता है। ये सब सूचनाएं, समाचार एव इननका विमर्श इस अक में शामिल है।

इधर पाकिस्तानपरस्त आतंकवाद के विरोध में भारत द्वारा किये गये ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी की चर्चा के चलते दिल्ली ब्लास्ट मामले में डॉक्टर जिहाद का सनसनीखेज मामला सामने आया है। जिसमें अलफलाह विश्वविद्यालय तथा अन्य डाक्टर के मुस्लिम डॉक्टर शामिल हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। जिस तरह अभी तक खेल और सीमाओं के मोर्चे पर पाकिस्तान को हराया है उसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी पाकिस्तान पर कडा प्रहार किया जा रहा है। अब,भी भारतीयों में पाकिस्तान के खिलाफ काफी आक्रोश है। आतंकवाद को कुचलने के लिए भारतीय जनमानस केंद्र सरकार के प्रति टकटकी लगाए हुए है। श्रीराम मंदिर में राम-सीता विवाह पंचमी के अवसर पर मंदिर के शिखर पर सरसंघचालक चालक डा मोहन भागवत जी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करकमलों द्वारा राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में धर्म ध्वजा फहराई गई जिस पर सूर्य, ओंकार और कोविदार वृक्ष की छवियां अंकित हैं। सनातन एवं हिन्दू धर्म, संस्कृति के विग्रह रूप में यह धर्म ध्वजा मंदिर की पूर्णता, गरिमा और आध्यात्मिकता का प्रतीक है।

मातृवंदना के इस अंक में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के विचार अमृत के साथ-साथ देवभूमि हिमाचल की पारंपरिक लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री भी पठनीय है। पंच परिवर्तन की श्रृंखला को निरंतर रखने का प्रयास है। संघ साधना में समर्पित पुषप में इस बार सत्यव्रती बलदेव सिंह परमार का त्यागमय जीवनवृत्त शामिल है।

वर्तमान में सोशल मीडिया की व्हाट्सएप और फेसबुक तथा जीमेल आईडी पर निर्भरता को चुनौती देते हुए एक भारतीय द्वारा अत्तराई व्हाट्सएप और जोहो मेल लॉन्च की गई है और राष्ट्रवादी भारतीयों द्वारा इसे अपनाए जाने का संकल्प प्रशंसनीय है। महिला जगत, बाल जगत, काव्य जगत सामाजिक चिंतन प्रतिक्रिया और अन्य स्थाई स्तंभों के माध्यम से भी सामयिक एवं उपयोगी समग्री उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया है। हमारा विश्वास है कि सुधी विद्वानों, लेखकों एवं पाठकों को यह अंक जरूर पसंद आएगा और मातृवंदना पत्रिका के प्रचार प्रसार में सब की भी सहभागिता रहेगी।

शिक्षा एवं चरित्र निर्माण

मीनाक्षी सूद

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में अत्यन्त महत्त्व है। इसका मूल उद्देश्य बच्चों को सभ्य, स्वाबलम्बी, सदाचारी, ज्ञानवान, चरित्रवान, विचारशील, कर्मठ तथा परिश्रमी बनाना है। शिक्षा के द्वारा हम अपनी सामाजिक, नैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। इससे हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। हर प्रकार की उन्नति के लिये शिक्षा प्राप्त करना मनुष्य के लिये परमावश्यक है। आज संसार में किसी देश या जाति ने जो भी उन्नति की है, उसका श्रेय शिक्षा को जाता है।

भारतवर्ष किसी दिन अपनी उच्च शिक्षा के कारण जगत् गुरु कहलाता था। विद्यार्थी के चरित्र को उज्जवल बनाने की तरफ पूरा ध्यान दिया जाता था। इसी कारण हमारी संस्कृति और सभ्यता उन्नति के शिखर तक पहुंची हुई थी। गुरु अपने आश्रमों, तपोवनों में शिक्षा देते थे, अपने आदर्शवान चरित्र द्वारा शिष्यों के लिये अनुकरणीय जीवन प्रस्तुत करते थे। इस देश में नालंदा, तक्षशिला, काशी एवं वनस्थली जैसे शिक्षा केंद्रों में असंख्य देशी-विदेशी शिक्षा ग्रहण कर के अपने आप को धन्य मानते थे। जिस से उन्होंने अपने और अपने राष्ट्र जीवन को नया प्रकाश दिया। इस प्रकार से हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली सर्वथा निर्दोष एवं आदर्शपूर्ण थी। हमारे महापुरुषों का समुज्जवल जीवन भी यही शिक्षा देता है। महाराणा प्रताप और शिवा जी ने अनेक प्रलोभनों के आने पर भी चरित्र को ही महत्व दिया। मनुस्मृति में लिखा है-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पथिव्यां सर्वमानवाः॥ (मनुस्मृति)

अर्थात् इस देश में उत्पन्न विद्वानों के पास पृथ्वी के सब मानव अपने-2 चरित्र को सीखें। भारतीयों का चरित्र इतना समुज्जवल था कि विदेशी भी यहां आकर चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त करते थे। ऐसे देश भारत में युवकों के चरित्र की शिथिलता देखकर प्रत्येक भारतीय का मस्तिष्क लज्जा से झुक जाता है। इसके दोषी है विदेशी सभ्यता एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली। लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में ठीक ही कहा था, ''मुझे विश्वास है कि इस शिक्षा योजना से भारत में ऐसा शिक्षित वर्ग बन जायेगा जो रक्त और रंग से तो भारतीय होगा पर विचार, वाणी और चरित्र से अंग्रेजी''। आज बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी. पास नवयुवक, युवतियाँ नौकरियों के पीछे भाग रहे हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में विषयों और पुस्तकों की संख्या अधिक होने से विद्यार्थी का मौलिक चिन्तन और विचार शक्ति पूर्णतया दब जाती है। तोता रटंत की पद्धति में गुरुओं के प्रति आदरभाव घट जाता है। आज की शिक्षा में बच्चों के बौद्धिक स्तर और चरित्र के गठन की ओर कम ध्यान दिया जा रहा है। प्राय: विद्यार्थी अनुशासनहीन बनते जा रहे हैं। सामान्य बातों पर हड़तालें, जलसा, जुलूसों आदि की प्रथा सी बन गई है। लड़कियों का अकेले चलना, बाजारों में घूमना और यहाँ तक कि अंधेरा हो जाने पर किसी व्यक्ति का निर्जन स्थान पर चलना एक समस्या बन गई है। आधुनिक शिक्षा उदरपूर्ति के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें शरीर, मन, बुद्धि, चरित्र एवं आचार-विचार आदि गुणों की उपेक्षा की जाती है। गांधी जी ने कहा था ''मेरा वश चले तो मैं इस शिक्षा को जड़मूल से उखाड़ कर फेंक दूं और इसे समाज की आवश्यकताओं के साथ जोड़ दूं।'' कहा भी गया है-

If wealth is lost, nothing is lost.
If health is lost, something is lost
When Character is lost, everything is lost.

आज का बालक किताबी कीड़ा बन कर रह गया है। उसे ठोस तथा गहन ज्ञान प्राप्त नहीं होता। पाठ्यपुस्तकें जन सामान्य की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करतीं और न ही बच्चों को क्रियात्मक ज्ञान देती हैं। उद्योग एवं आजीविका का इसमें कोई स्थान नहीं है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। परन्तु समानधर्मी तत्त्वों को शिक्षा देकर 'धर्मशिक्षा' को भी स्थान मिलना चाहिये। जिससे विद्यार्थियों में सत्यपरायणत वचननिष्ठा, राष्ट्र प्रेम, धैर्य, संयम एवं चरित्र आदि गुण आ सकते हैं। बालक राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। वह कल के नेता हैं। उनके गुणों का समुचित विकास तथा दुर्गुणों का नाश होना आवश्यक है। अन्यथा उनका जीवन सष्ट्र (राष्ट्र) के लिए घातक एवं निष्प्रयोजन सिद्ध होगा।

हम नवयुग के हैं निर्माता, रोक सके कब हमको बंधन।
विश्व विजेता हम जग त्राता, असुर मात्र का करते भंजन॥

आप कितने भाग्यशाली हैं

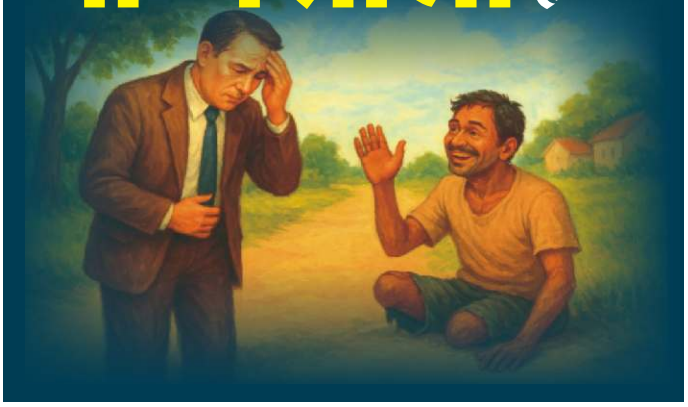

आप चाहे जैसी स्थिति में क्यों न हों, आपको ऐसी अनेक वस्तुएं या गुण अपने अंदर मिल जाएंगे, जो दूसरों के पास नहीं हैं। आपकी ये चीजें आपको दूसरे की अपेक्षा उन्नत, भाग्यशाली और उच्च बनाती हैं। एक उदाहरण लीजिये–

एक बार हैराल्ड एबोट नामक एक व्यक्ति की अपने सम्पूर्ण जीवन की कमाई नष्ट हो गयी; ऋण चढ़ गया, जिसे साफ करने में उन्हें सात वर्षों की आवश्यकता थी। वे नयी दुकान खोलने के लिये और रुपया कर्ज लेने जा रहे थे। मन आर्थिक चिन्ताओं से भरा हुआ था। किस प्रकार ऋण उतरे? गृहस्थी का कार्य कैसे चले? सामाजिक प्रतिष्ठा कैसे कायम रहे? वे एक पराजित व्यक्ति के समान दु:खी हुए भारी मन से सड़क पर चले जा रहे थे कि उन्हें सड़क के किनारे बैठा हुआ एक व्यक्ति मिला, जिसके टांगें नहीं थीं, कट गयी थीं। वह हाथों के सहारे चलता था। उसने हंसते हुए हैराल्ड साहब का स्वागत किया। उसने हृदय का उत्साह और प्रसन्नता उंडेलते हुए कहा– 'प्रणाम! क्या सुहावना प्रभात है। कहिये, अच्छे तो हैं?' इस व्यक्ति के प्रसन्न जीवन ने, भीषण कठिनाई तथा अंग-भंग में भी उल्लास और हर्ष से उनका जीवन परिपूर्ण बदल दिया। उन्हें अपनी चिन्ता पर आत्मग्लानि प्रतीत हुई। उन्हें प्रतीत हुआ कि उनकी टांगें परमेश्वर का कितना बड़ा वरदान थीं। उन्हें अपनी निराशा और चिन्तापर हार्दिक क्षोभ हुआ। उन्होंने सोचा कि जब वह कटी हुई टांगों वाला गरीब व्यक्ति प्रसन्न, उल्लसित हो सकता है और जीवन का रस लूट सकता है तो वे तो उससे भी अधिक अंशों में मजा ले सकते हैं। इस भाव ने उनकी चिन्ता को उल्लास में बदल दिया और वे उन सम्पदाओं को देखने लगे, जो अब भी उनके पास परमेश्वर की देन के रूप में सुरक्षित थीं।

आप स्वयं देखिये– क्या आपका स्वास्थ्य वह चीज नहीं है कि आप उसके ऊपर गर्व कर सकें? आपका घर, खेत, वस्त्र इत्यादि यदि कीमती नहीं हैं, तो न सही, क्या परवाह है? आपकी आय यदि थोड़ी है तो कोई हर्ज नहीं। उन करोड़ों गरीबों को देखिये जो रोज मजदूरी से पेट पालते हैं। रुपया जोड़कर क्या कीजियेगा? आगे आपके बाल-बच्चे आपकी सहायता करेंगे। फिर क्यों चिन्ता करते हैं?

हमारे जीवन में नब्बे प्रतिशत बातें ठीक हमारे स्वभाव के, हमारे पक्ष के, हमारी सुख-सुविधा, प्रसन्नता-लाभ के लिये होती हैं। केवल दस प्रतिशत ऐसी होती हैं, जिनके विषय में हमें कुछ सोचने की आवश्यकता है, चिन्ता की नहीं। हमें प्रसन्न होने के लिये इस बात की जरूरत है कि हम अपने पक्ष की इन नब्बे प्रतिशत भाग्यशाली चीजों को देखें और उन पर चित्त को एकाग्र करें और दस प्रतिशत विपक्ष की वस्तुओं को त्याग दें। उनके बारे में न सोचें। अपने अभाव का, अपनी कमजोरियों का, अपने पास जो-जो वस्तुएं नहीं हैं, उनका चिन्तन करना, अपनी उत्पादक और सृजनात्मक शक्तियों का क्षय करना है।◆◆◆

भारतीय विरासत और स्वाभिमान का प्रतीक

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित वर्ष भर चलने वाले स्मरणोत्सव के उद्घाटन अवसर पर कहा –

वंदे मातरम् केवल एक शब्द नहीं है–यह एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है और एक पवित्र संकल्प है। वंदे मातरम् मां भारती के प्रति भक्ति और आध्यात्मिक समर्पण का प्रतीक है। यह शब्द हमें हमारे इतिहास से जोड़ता है, हमारे वर्तमान को आत्मविश्वास से भर देता है और हमारे भविष्य को यह विश्वास दिलाने का साहस देता है कि कोई भी संकल्प पूर्ण होने से परे नहीं है, कोई भी लक्ष्य हमारी पहुंच से परे नहीं है। वंदे मातरम् का सामूहिक गायन अभिव्यक्ति की सीमाओं से परे है। इतने सारे स्वरों के बीच, विलक्षण लय, एकीकृत स्वर, साझा रोमांच और निर्बाध प्रवाह उभरा।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

7 नवम्बर 2025 को वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी

7 नवंबर 2025 ऐतिहासिक दिन है, आज राष्ट्र वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है। यह पावन अवसर हमारे नागरिकों को नई प्रेरणा और नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इस दिन को इतिहास के पन्नों में अंकित करने के लिए, वंदे मातरम् को समर्पित एक विशेष स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी किया गया है।

वंदे मातरम् का सार क्या है? इसका सार है भारत, मां–भारती–जो देश का शाश्वत विचार है। यह विचार मानव सभ्यता की शुरुआत से ही आकार लेने लगा था। यह प्रत्येक युग को एक अध्याय के रूप में देखते हुए, विभिन्न राष्ट्रों के उदय, विभिन्न शक्तियों के उदय, नई सभ्यताओं के विकास, शून्य से महानता की उनकी यात्रा और अंतत: शून्य में विलीन होने का साक्षी रहा। भारत ने इतिहास के निर्माण और विनाश, विश्व के बदलते भूगोल को देखा है। इस अनंत मानव इतिहास यात्रा से, भारत ने सीखा, नए निष्कर्ष निकाले और उनके आधार पर अपनी सभ्यता के मूल्यों और आदर्शों को आकार दिया तथा अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान गढ़ी। भारत शक्ति और नैतिकता के बीच संतुलन को समझते हुए शुद्ध सोने की तरह परिष्कृत राष्ट्र के रूप में उभरा और अतीत की चोटों के बावजूद अमर है।

यही कारण है कि औपनिवेशिक काल में, वंदे मातरम् इस संकल्प का उद्घोष बन गया कि देश स्वतंत्र होगा, मां–भारती की दासता की बेड़ियां टूट जाएंगी और उसकी संतानें अपने भाग्य की निर्माता स्वयं बनेंगी।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार बंकिमचंद्र का आनंदमठ केवल एक उपन्यास नहीं है–यह एक स्वतंत्र भारत का स्वप्न है। बंकिम बाबू की रचना की प्रत्येक पंक्ति, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक भावना गहरे अर्थ रखती है। यद्यपि यह गीत औपनिवेशिक काल में रचा गया था, फिर भी इसके शब्द सदियों की गुलामी की छाया में कभी सीमित नहीं रहे। यह पराधीनता की स्मृतियों से मुक्त रहा और इसीलिए वंदे मातरम् हर युग और हर काल में प्रासंगिक बना हुआ है। गीत की पहली पंक्ति–सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्यश्यामलाम्मातरम् प्रकृति के दिव्य आशीर्वाद से सुशोभित हमारी मातृभूमि के प्रति सम्मान की भावना की अभिव्यक्ति है।

नदियां, पहाड़, जंगल, पेड़ और उपजाऊ मिट्टी में हमेशा से प्रचुरता प्रदान करने की शक्ति हज़ारों

वर्षों से भारत की पहचान रही है। जब बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् की रचना की, तब भारत उस स्वर्णिम युग से बहुत दूर आ चुका था। विदेशी आक्रमणों, लूटपाट और शोषणकारी औपनिवेशिक नीतियों ने देश को गरीबी और भुखमरी से ग्रस्त कर दिया था। फिर भी, बंकिम बाबू ने एक समृद्ध भारत के दृष्टिकोण का आह्वान किया, जो इस विश्वास से प्रेरित था कि चाहे कितनी भी बड़ी चुनौतियां क्यों न हों, भारत अपने स्वर्णिम युग को पुनर्जीवित कर सकता है।

औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ भारत को हीन और पिछड़ा बताकर अपने शासन को उचित ठहराने की कोशिश करते थे। वंदे मातरम् की पहली पंक्ति ही इस झूठे प्रचार को पूरी ताकत से ध्वस्त कर देती है। इसलिए, वंदे मातरम् सिर्फ़ आज़ादी का गीत नहीं था, इसने करोड़ों भारतीयों के सामने एक स्व्तंत्र भारत की एक तस्वीर भी पेश की यानी सुजलाम् सुफलाम् भारत का सपना है। जब बंकिम बाबू ने 1875 में बंगदर्शन में वंदे मातरम् प्रकाशित किया, तो कुछ लोगों ने इसे केवल एक गीत माना। लेकिन जल्द ही, वंदे मातरम् भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आवाज बन गया। प्रत्येक क्रांतिकारी के होठों पर एक मंत्र, प्रत्ज्येक भारतीय की भावनाओं की अभिव्यक्ति। स्वतंत्रता आंदोलन का शायद ही कोई अध्याय हो जहां वंदे मातरम् किसी न किसी रूप में मौजूद न हो।

वर्ष 1896 में, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने कलकत्ता अधिवेशन में वंदे मातरम् गाया था। वर्ष 1905 में, जब बंगाल का विभाजन हुआ जो राष्ट्र को बांटने के लिए अंग्रेजों का खतरनाक प्रयोग था, उस समय वंदे मातरम् इस तरह की साजिशों के खिलाफ एक चट्टान की तरह खड़ा था। बंगाल के विभाजन के विरोध के दौरान, सड़कें एक सामूहिक वंदे मातरम् की आवाज से गूंज उठी थीं।

जब बारीसाल अधिवेशन के दौरान प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाई गईं, तब भी उनके होठों पर शब्द थे- वंदे मातरम्। वीर सावरकर जैसे स्वतंत्रता सेनानी, जो विदेश से काम कर रहे थे, एक-दूसरे को वंदे मातरम् कहकर अभिवादन करते थे। कई क्रांतिकारियों ने फांसी के तख्ते पर खड़े होकर भी वंदे मातरम गाया। ऐसी अनगिनत घटनाएं, इतिहास की अनगिनत तारीखें, विविध क्षेत्रों और भाषाओं वाले एक विशाल राष्ट्र में, ऐसे आंदोलन हुए जहां एक नारा, एक संकल्प, एक गीत हर आवाज में गूंजता था-वंदे मातरम्।

महात्मा गांधी ने कहा था कि वंदे मातरम् हमारे सामने अविभाजित भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है। श्री अरबिंदो ने वंदे मातरम् को केवल एक गीत नहीं, बल्कि एक मंत्र के रूप में वर्णित किया है,जो आंतरिक शक्ति को जागृत करता है।

भारत का राष्ट्रीय ध्वज अपने प्रारंभिक स्वरूप से लेकर आज के तिरंगे के रूप में समय के साथ विकसित हुआ है, लेकिन एक बात हमेशा बनी रही है, जब भी ध्वज फहराया जाता है, प्रत्येक भारतीय के हृदय से सहज ही भारत माता की जय और वंदे मातरम् के शब्द निकलते हैं। राष्ट्र राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है, तो यह देश के महान नायकों को भी श्रद्धांजलि है। यह उन अनगिनत शहीदों को श्रद्धांजलि है जिन्होंने वंदे मातरम् का उद्घोष करते हुए फांसी को गले लगा लिया, वंदे मातरम् का उद्घोष करते हुए कोड़ों की मार झेली, वंदे मातरम का मंत्र पढ़ते हुए बर्फ की सिल्लियों पर अडिग रहे।

आज, सभी 140 करोड़ भारतीय, वंदे मातरम् का गान करते हुए राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन प्रत्येक ज्ञात, अज्ञात और गुमनाम देश भक्तों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिनके नाम इतिहास के पन्नों में कभी दर्ज नहीं किए गए।

वैदिक मंत्र 'यह देश की भूमि हमारी माता है, हमारी जननी है, और हम इसकी संतान हैं,' - वैदिक काल से ही भारत के लोग राष्ट्र की मातृरूप में पूजा करते आए हैं। इसी वैदिक विचार ने वंदे मातरम् के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में नई चेतना का संचार किया। जो लोग राष्ट्र को केवल एक भू-राजनीतिक इकाई के रूप में देखते हैं, उनके लिए राष्ट्र को मां मानने का विचार आश्चर्यजनक लग सकता है। लेकिन भारत अलग है। भारत में, मां जन्म देने वाली, पालन-पोषण करने वाली है और जब उसकी संतान संकट में होती है, तो वह संकटों को हरने वाली भी होती है। मां भारती अपार शक्ति रखती है, विपत्ति में हमारा मार्गदर्शन करती है और शत्रुओं का नाश करती है। राष्ट्र को मां और मां को शक्ति के दिव्य अवतार के रूप में देखने की धारणा ने एक ऐसे स्वतंत्रता आंदोलन को जन्म दिया जिसमें पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान रूप से शामिल करने का संकल्प लिया गया था। इस दृष्टिकोण ने भारत को एक बार फिर एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखने में सक्षम बनाया जिसमें महिला शक्ति राष्ट्र निर्माण में सबसे आगे रही है।

वंदे मातरम्, स्वतंत्रता के शहीदों का गीत होने के साथ-साथ हमें उसी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रेरित भी करता है। मां-भारती ज्ञानदायिनी सरस्वती, समृद्धिदायिनी लक्ष्मी और शस्त्र एवं शक्ति की अधिष्ठात्री दुर्गा का स्वरूप है। हमारा दृष्टिकोण एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण का है जो ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अग्रणी हो; एक ऐसा राष्ट्र जो ज्ञान और नवाचार की शक्ति से समृद्ध हो; और एक ऐसा राष्ट्र जो राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में आत्मनिर्भर हो।◆◆◆

भारतीय अस्मिता एवं स्व गौरव का राष्ट्रगीत

'माता भूमिः पुत्रः अहम् पृथिव्याः यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं', इस दृष्टि से राष्ट्रभक्त एवं मातृभक्त संतान के रूप में उसके दिव्य एवं अलौकिक स्वरूप का सम्मान, पूजा-अर्चना एवं संरक्षण हमारा धर्म एवं कर्तव्य भी है।

बंकिम चन्द्र चटर्जी
राष्ट्रगौरव गीत के जनक

बंकिम चंद्र का 'आनंदमठ' एक ऐसी कृति है,जो भारत की सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय अस्मिता को भी अमरत्व प्रदान करने वाली है। इसी कालजयी कृति का अंश है- 'वंदे मातरम्'।

बंकिम चंद्र चटर्जी कोलकाता विश्वविद्यालय के स्नातक थे। वे सरकारी सेवा में डिप्टी मजिस्ट्रेट तथा डिप्टी कलेक्टर भी रहे। इसी दौरान ब्रिटिश अभिलेख व राजपत्रों के अवलोकन से उन्हें 1763 से 1780 के सन्यासी विद्रोह की जानकारी हासिल हुई, जब साधु-सन्यासी ढाका और उत्तर बंगाल में अंग्रेजी सरकार के घोर अत्याचारों के खिलाफ लामबंद हुए। इस प्रतिरोध की कहानी 'आनंदमठ' उपन्यास की आधारभूमि बनी। इसी उपन्यास में वंदे मातरम् इस अमर गीत का उल्लेख है। 1870 में ब्रिटिश साम्राज्य ने जब अपने प्रति वफादारी दिखाने के दमनकारी नियमों को सख्ती से लागू करना शुरु किया, तब सभी सरकारी कार्यक्रमों और स्कूलों में भारतीयों को 'गौड सेव द क्वीन' गीत अनिवार्य कर दिया गया। यह राजनीति के साथ-साथ धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गुलामी का भी एक हथकंडा था, जिसके माध्यम से विदेशी शासक के आगे नतमस्तक होना भारतीयों के लिए अनिवार्य किया गया था और यह उन्हें स्वीकार न था।

7 नवंबर, 1875 को बंकिम चंद्र ने 'वंदे मातरम्' गीत लिखा। जिस काल में भारतीय अंग्रेजी शासन के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने के लिए महारानी का गुणगान करने पर विवश थे, उस विकट स्थिति में बंकिम चंद्र ने मातृभूमि के लिए वंदे मातरम् गीत रचा। यह साम्राज्यवाद के प्रति आत्म समर्पण के विरुद्ध शंखनाद एव खुला विद्रोह था। क्योंकि बंकिम चंद्र ने इस गीत के माध्यम से भारत भूमि को माता स्वीकार कर, इसकी पवित्र माटी से तिलक करने का संकल्प लिया था। इस गीत के माध्यम से उन्होंने भारत माता की गोदी में प्रवाहित नदियों, लहलहाते हरे भरे खेतों, स्वच्छ एवं ताजी हवाओं में मातृभक्ति तथा मातृभूमि का सम्मान देखा और इसे एक भारत माता के दिव्य स्वरूप में प्रस्तुत किया।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने बचपन में नागपुर के नील सिटी हाईस्कूल में वंदे मातरम् गीत की प्रस्तुति दी थी। उस समय अंग्रेजी सरकार ने विद्यालय में राजनीतिक गतिविधियों और राष्ट्रवादी गीतों पर प्रतिबंध लगा रखा था। केशव हेडगेवार और उनके साथियों ने स्कूल में जब भी अंग्रेज अधिकारी आते, वहां वंदे मातरम् के नारे लगाकर विरोध जताया। इस कारण स्कूल प्रबंधन ने उनकी पूरी कक्षा को निलंबित कर दिया और अंततः हेडगेवार व उनके एक साथी को स्कूल से निकाल दिया गया। सरकार ने उनसे वंदे मातरम् न गाने के लिए कहा, लेकिन हेडगेवार ने इसे स्वीकार न करते हुए कहा कि ''वंदे मातरम् अपराध नहीं, बल्कि भारत माता का महानतम वरदान है, और वह इसे बार-बार गाते रहेंगे''। इस प्रकार हेडगेवार ने अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध

अपने राष्ट्रभक्ति गीत वंदे मातरम् को बार-बार गाकर विरोध किया और सजा पाई लेकिन अंग्रेजों के आगे झुके नहीं।

वंदे मातरम् को सुब्रह्मण्यम भारती ने दक्षिण भारत में, बाल गंगाधर तिलक ने पश्चिम भारत में और लाला लाजपत राय ने उत्तर में इसे लोकप्रिय बनाया। अरविंद घोष और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने इसे दार्शनिक गहराई दी। ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स ने नारायण चन्द्र मुखर्जी, सत्यभूषण गुप्ता और आर एन मुखर्जी की आवाज़ में इस गीत को देश-दुनिया में फैलाया। भगिनी निवेदिता, मैडम भीकाजी कामा और सरदार भगत सिंह जैसे अमर क्रांतिकारियों ने भी वंदे मातरम् के स्वर को बुलंद किया। सुभाष चंद्र बोस ने वंदे मातरम् को आजाद हिंद फौज का युद्ध नाद बना दिया। महात्मा गांधी ने भी वंदे मातरम् को सभाओं में गाने की सलाह दी।

वंदे मातरम् अपराध नहीं, बल्कि भारत माता का महानतम वरदान है, और हम इसे बार-बार गाते रहेंगे।
-डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

1905 में अवनींद्रनाथ ठाकुर ने भारत माता की एक तस्वीर बनाई और इस गीत को भारत माता का स्वरूप प्रदान किया। 1906 में लाला लाजपत राय ने वंदे मातरम् पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया।

वास्तव में 1896 से 1992 तक की अवधि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में वंदे मातरम् गीत गाया जाता था। उसके बाद 1922 में आंध्र प्रदेश के काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन में जब महान गायक पंडित विष्णु दिगंबर पुलस्कर ने वंदे मातरम् गाना शुरु किया उसी समय सत्र अध्यक्ष मोहम्मद अली ने आपत्ति जताई कि मुसलमानों के लिए यह गीत गाना संभव नहीं। मोहम्मद अली की राय को सारे मुस्लिम समुदाय की मान्यता स्वीकार करते हुए 1937 में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में वंदे मातरम् के उस हिस्से को हटा दिया गया, जिस पर मुस्लिम समुदायों को आपत्ति थी। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के भारी विरोध के बाद अंतत: 24 जनवरी 1950 को डॉ राजेंद्र प्रसाद ने जन गण मन को राष्ट्रीय गान बनाने की घोषणा की और वंदे मातरम् को आदर सहित राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया गया और वंदे मातरम् का पूरा गीत गाए जाने की बजाए केवल पहले दो छंदों को ही स्वीकृति भी प्रदान की गई।

अंतत: 15 अगस्त 1947 को भारत की आजादी के बाद 'जन गण मन' को राष्ट्रगान और वंदेमातरम् को राष्ट्रगीत घोषित किया गया।

1947 में 15 अगस्त को प्रात: आकाशवाणी से पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के 'राग देश' में निबद्ध वंदे मातरम् के गायन का सीधा प्रसारण हुआ। इसके बाद 1950 में 24 जनवरी को वंदे मातरम् राष्ट्रीय गीत व जन गण मन राष्ट्रगान बना। 15 सितंबर 1959 को जब दूरदर्शन शुरु हुआ, तब से सुबह की शुरुआत वंदे मातरम् से होती रही है।

1952 में प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक हेमंत गुप्ता ने अपनी फिल्म आनंद मठ में यह गीत पहली बार बड़े पर्दे पर उतारा और वंदे मातरम् एक अमर गीत बनकर गूंजने लगा।

वंदे मातरम् का यह गीत अनेक स्वरों में, विभिन्न रूपों में प्रचलन में रहा, परंतु इसकी आत्मा का भाव सदैव एक ही बना रहा। वर्ष 1997 में ए.आर.रहमान ने 'मां तुझे सलाम' के रूप में इस गीत की भावना को पुन: जीवंत रूप प्रदान किया। वर्ष 2017 में श्याम नारायण चौकसे एवं यूनियन ऑफ इंडिया मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्देश में कहा है कि

'राष्ट्रीय प्रतीक झंडा, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत सभी का सम्मान भारत की भावना में शामिल है'। इस निर्णय में राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत वंदे मातरम् को भी जोड़ा गया है।

2025 में वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में भारत के प्रसिद्ध संगीतकारों एवं वाद्यवृंद द्वारा वंदे मातरम् की भव्य संगीतमयी प्रस्तुति दी गई। इस प्रकार वंदे मातरम्, भारतीय अस्मिता और इतिहास के स्वर्णिम गौरव का राष्ट्रगीत है, जो आज भी करोड़ों भारतीयों के लिए गौरव और आत्म सम्मान का प्रतीक है। अत: प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि इस राष्ट्रगीत का सम्मान सहित गान करने की परंपरा को 'स्व गौरव' मानकर अवश्य अपनाएं।◆◆◆

वन्दे मातरम् के 150 वर्ष

भारत की आत्मा का गौरव गान

भारत की आजादी के संघर्ष का सबसे लोकप्रिय नारा

150वीं वर्षगांठ पर सिक्का तथा वेबसाइट जारी

हितेन्द्र शर्मा

'वंदे मातरम्' केवल एक गीत नहीं बल्कि भारत की आत्मा का अनुनाद है; वह दिव्य स्वर, जो दासता की अंधकारमयी रात में स्वतंत्रता की पहली किरण बनकर फूटा था तथा जिसके उजाले से भारत का सोया हुआ जनमानस भी जागृत होकर उठ खड़ा हुआ था।। यह वह पुकार थी जिसने सोए हुए भारत को जगा दिया, बँटे हुए समाज को एक सूत्र में पिरो दिया और एक ऐसे राष्ट्र का स्वप्न जगाया जो अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी अस्मिता पर गर्व कर सके।

उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण के दौर में जब अंग्रेज़ी शासन की बेड़ियाँ राष्ट्र की चेतना को जकड़े थीं तब बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 1870 के दशक में 'वन्दे मातरम्' की रचना की। 1882 में जब उन्होंने इसे अपने उपन्यास आनन्दमठ में स्थान दिया, तब यह गीत केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं रहा, यह भारतमाता की मुक्ति का मंत्र बन गया। अरविंद घोष ने लिखा 'यह केवल गीत नहीं बल्कि स्वतंत्र भारत की आत्मा है।' जेलों की दीवारों से लेकर गाँव की चौपालों तक 'वन्दे मातरम्' स्वतंत्रता की हुंकार बन गया।

इस गीत की भाषा और संरचना भारतीयता की जीवंत मूर्ति हैं। संस्कृत और बंगला के संयोजन से सजे इसके शब्द 'सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्' केवल कविता नहीं बल्कि भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक छवि हैं। यहां 'माँ' कोई देवी ही नहीं बल्कि वह धरती भी है जो हमें जीवन देती है, संस्कार देती है और अपने आँचल में सबको समेटे रहती है।

स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने इसकी सांस्कृतिक गरिमा को स्वीकार करते हुए 24 जनवरी 1950 को 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया। उस समय यह विवेकपूर्ण निर्णय लिया गया कि गीत के पहले दो पदों को औपचारिक रूप से अपनाया जाए ताकि इसकी भावना सर्वधर्मसमभाव की भारतीय परम्परा के अनुरूप रहे। सत्य यह है कि 'वन्दे मातरम्' किसी मत या विचारधारा का गीत नहीं बल्कि भारत की उस आत्मा का स्वर है, जो हर भारतीय के भीतर बसती है। इसकी शक्ति उस भावना में निहित है जो यह कहती है कि उसे किसी मत, भाषा या प्रदेश की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। आज, जब इस गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं, यह अवसर उत्सव के साथ आत्मचिंतन का भी है। वन्दे मातरम् का सच्चा स्मरण तभी है, जब यह हमारे जीवन-मूल्यों में उतर जाए, जब देशप्रेम केवल शब्द नहीं, कर्म बन जाए।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में वर्षभर चलने वाले स्मरणोत्सव का शुभारंभ करके एक स्मारक डाक टिकट और एक विशेष सिक्का भी जारी किया तथा 'वंदे मातरम्' की आधिकारिक वेबसाइट का भी उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री के अनुसार 'वंदे मातरम्' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक भावना, एक मंत्र और एक संकल्प है। यह शब्द मां भारती के प्रति भक्ति और समर्पण का प्रतीक है। हजारों लोगों की आवाज़ों में एक साथ गूंजता 'वंदे मातरम्' एकता और देशप्रेम की लहर पैदा करता है। यह ऊर्जा हर भारतीय के हृदय को स्पंदित कर देती है। यह हमें याद दिलाती है कि भारत की ताकत उसकी विविधता में है, लेकिन हमारे हृदय की धड़कन एक है-'वंदे मातरम्'। वंदे मातरम्-मां भारती के प्रति नमन, एकता और देशभक्ति का प्रतीक। 'गुलामी के समय अंग्रेज भारत को पिछड़ा बताकर अपने शासन को सही ठहराते थे, लेकिन 'वंदे मातरम्' ने उनके इस झूठे प्रचार को तोड़ दिया। यह गीत न सिर्फ आजादी का प्रतीक बना, बल्कि इसने देशवासियों को 'सुजलाम्-सुफलाम्' स्वतंत्र भारत का सपना भी दिखाया।

150 वर्षों की यह ऐतिहासिक यात्रा हमें यह भी याद दिलाती है कि हमारी राष्ट्रीयता किसी पर श्रेष्ठता थोपने का नहीं बल्कि सबको साथ लेकर चलने का भाव है। जब हम अपने मतभेदों के पार एक भारत की अनुभूति करते हैं, जब हमारी विविधता हमारी शक्ति बनती है तभी 'वन्दे मातरम्' का अर्थ साकार होता है। यह गीत हमारे इतिहास का गौरव है, वर्तमान का मार्गदर्शक और भविष्य का व्रत। जब भी यह स्वर गूंजता है, तब भारत अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ कहता है 'वन्दे मातरम्'।◆◆◆

संघर्ष से शिखर तक

रेणुका सिंह ठाकुर के स्विंग में झूमा भारत

हिमाचल की बेटी रेणुका सिंह ठाकुर ने यह दिखा दिया है कि ऊंचाइयां केवल शहरों के लिए नहीं होतीं, बल्कि छोटे से गांव की मिट्टी में भी ऐसे सपने पनप सकते हैं जो देश को गौरवान्वित करें। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि अगर संकल्प दृढ़ हो, तो संसाधनों की कमी भी राह नहीं रोक सकती। आज रेणुका न सिर्फ एक सफल क्रिकेटर हैं, बल्कि वे उन तमाम बेटियों के लिए आशा की किरण बन गई हैं, जो सीमित साधनों के बावजूद बड़ा सपना देखने का साहस रखती हैं। आने वाले समय में वह निश्चय ही प्रेरणा देने वाली, मार्गदर्शक बनने वाली और बदलाव की वाहक के रूप में एक नई कहानी लिखेंगी।

हिमाचल प्रदेश के छोटे-से गांव पारसा (रोहडू तहसील, शिमला जिला) की बेटी रेणुका सिंह ठाकुर ने न सिर्फ अपने लिए बल्कि पूरे प्रदेश और देश के लिए प्रेरणा का नया अध्याय लिखा है। 2 जनवरी 1996 को सभ्रांत एवं सुशिक्षित ठाकुर परिवार में जन्मी रेणुका ने अपनी मातृभूमि के लिए, अपनी मां के संघर्ष के लिए, और महिला क्रिकेट में नए मुकाम बनाने के लिए सफर तय किया है। उनकी प्रारंभिक पृष्ठभूमि और संघर्ष की बात करें तो पिता केहर सिंह ठाकुर का निधन उस समय हो गया था, जब रेणुका मात्र तीन वर्ष की थीं। उनके पिता हिमाचल प्रदेश सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग में थे। उनके बाद माँ सुनीता ठाकुर ने अकेले परिवार का बोझ उठाया तथा बेटी की प्रतिभा को पहचानने में सक्रिय रहीं। गांव की सीमित संसाधनों वाली पृष्ठभूमि में रहते हुए, रेणुका ने स्थानीय मैदानों पर खेलकूद शुरू की। उनके चाचा जी डॉ. भूपेंद्र सिंह ठाकुर जो स्वयं एक उत्कृष्ट खिलाड़ी रहे हैं और वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय ठियोग में प्रिंसीपल के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने रेणुका की प्रतिभा की तरफ देखा और 2009 में उन्हें हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन की महिला इकाई की रेसिकेंशियल अकादमी धर्मशाला में भेजा, जहां उन्होंने गेंदबाजी-तकनीक और खेल अनुशासन सीखा। रेणुका ने हिमाचल के अंडर-16 व अंडर-19 टीमों में खेलना शुरू किया और घरेलू महिला एकदिवसीय लीग 2019-20 में 23 विकेट के साथ सर्वाधिक विकेट लेने वाली गेंदबाज बनीं । अगले वर्ष 2021 में उन्हें भारत की महिला क्रिकेट टीम में जगह मिली और 7 अक्टूबर 2021 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ट्वेंटी-20 में अंतर्राष्ट्रीय पदार्पण किया। 18 फरवरी 2022 को उन्होंने वेस्ट इंडीज/न्यूज़ीलैंड दौरे में वनडे में भी पदार्पण भी कर लिया।

विश्व मंच पर संघर्ष और सफलता

रेणुका सिंह ठाकुर ने अपने राज्य-पृष्ठभूमि की सीमाओं को तोड़ते हुए भारत की महिला टीम के तेज-गेंदबाजों में अपना नाम कायम किया। उनकी गेंदबाजी न सिर्फ देश में बल्कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मानित हुई है। खास बात यह है कि उनके गाँव में और हिमाचल के ग्रामीण-क्षेत्रों में एक लड़की का क्रिकेटर बनना एक बड़ी कहानी है, जिसमें आर्थिक चुनौतियाँ, संसाधन-कमी और सामाजिक धारणाएँ भी बाधा बनीं। लेकिन उनकी मां सुनीता ने यह घोषणा कर दी थी कि **'मेरी बेटी को किसी भी खेल से नहीं रोकूंगी; मैं उसके लिए हर संभव प्रयास**

करूंगी।' इस दृढ़ निश्चय ने रेणुका के सफर में ऊर्जा भरी। रिस्क और चुनौतियों के बीच खड़ी रेणुका ने अपने प्रदर्शन से यह साबित किया कि आने-वाले समय में हिमाचल की बेटियों के लिए भी दरवाजे खुल सकते हैं। विश्व महिला कप जीतने के बाद उनके गांव में उनकी वापसी पर भव्य स्वागत हुआ, जहां स्थानीय लोग माँ-बेटी को गले लगाकर बधाई देने पहुंचे। राज्य सरकार ने भी उनके इस सफल सफर को महत्व देते हुए उन्हें एक करोड़ रुपये का पुरस्कार देने का एलान किया, जो इस छोटे से गांव की बेटी के लिए एक बड़ी प्रेरणा बनी। रेणुका जब मैदान पर लौटती हैं, तो न सिर्फ एक क्रिकेटर बल्कि लाखों लड़कियों के लिए उम्मीद की किरण बनकर आती हैं। उनके साथ उनके गांव की मिट्टी, उनकी माँ का त्याग, उनका परिवार-समर्थन तथा हिमाचल की संस्कृति सभी जुड़ी हुई हैं। उन्होंने बताया है कि **'मेरी माँ और मामा ने समय पर मुझे अकादमी भेजा, उन्हें पता था कि मुझे मौका मिलेगा।'** इस बड़ी उपलब्धि के बाद रेणुका ठाकुर की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है, जिसमें और लड़कियों को प्रोत्साहित करना, ग्रामीण-पृष्ठभूमि से आने वाले खिलाड़ियों को मंच प्रदान करवाना और हिमाचल प्रदेश को खेल मानचित्र पर और ऊंचा उठाना शामिल है।◆◆◆

पीएम मोदी ने की तारीफ

सिंगल पेरेंट के लिए आसान नहीं होता...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिला एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप 2025 में शानदार प्रदर्शन करने वाली भारतीय महिला क्रिकेटर रेणुका सिंह ठाकुर की मां की विशेष रूप से प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि रेणुका की मां ने एक सिंगल पेरेंट के रूप में बहुत ही कठिन जीवन परिस्थितियों में अपनी बेटी के करियर और प्रगति में अहम योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इतने मुश्किल हालात में भी एक मां द्वारा अपनी बेटी के लिए इतनी मेहनत और बलिदान करना बहुत बड़ी बात है। उन्होंने रेणुका की मां को अपनी तरफ से प्रणाम भेजने को कहा। प्रधानमंत्री मोदी ने इस संघर्ष और समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि यह एक मां का एक बहुत बड़ा और खास योगदान है जो सम्मान के योग्य है।◆◆◆

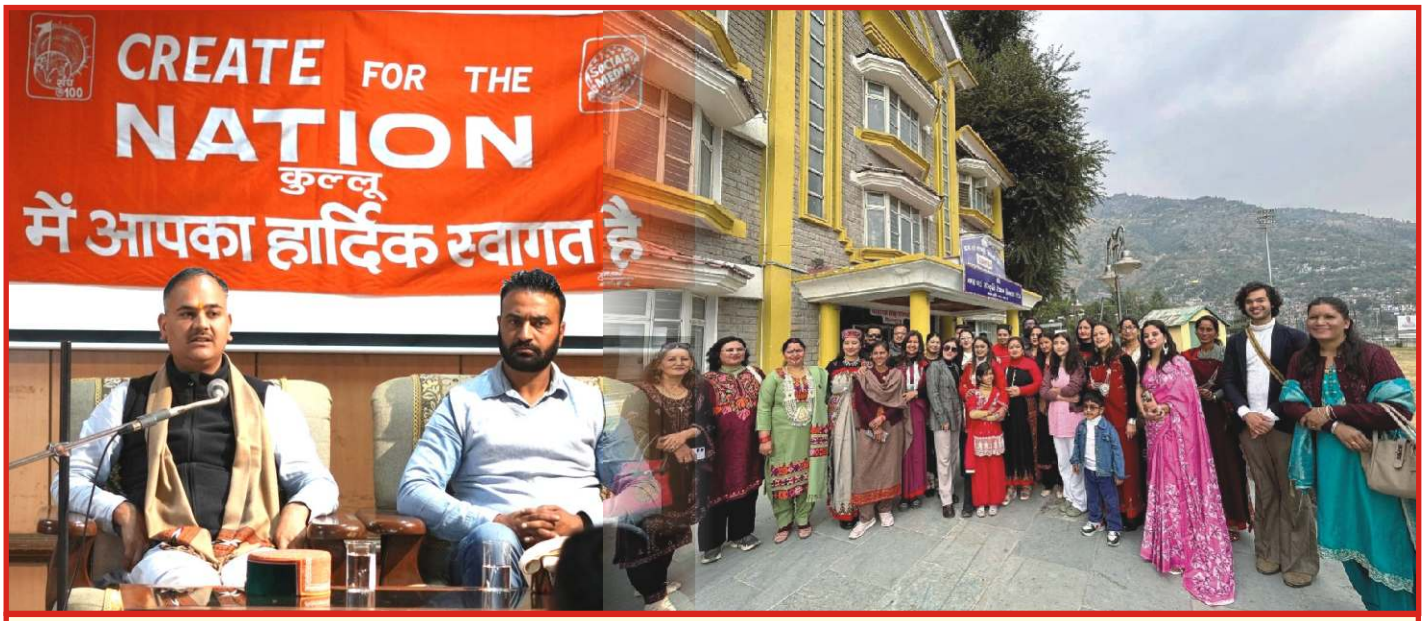

कुल्लू में 'Create For The Nation' कार्यक्रम में 76 सोशल मीडिया क्रिएटर्स ने लिया भाग। कुल्लू स्थित देव सदन में #CreateForTheNation कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें जिला कुल्लू के 76 सोशल मीडिया क्रिएटर्स ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय, प्रतिभाशाली प्रभावकों को समाज व राष्ट्र हित में कंटेंट बनाने हेतु प्रेरित करना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता श्री प्रताप जी ने उपस्थित प्रभावकों से राष्ट्र निर्माण पर केन्द्रित 'पंच परिवर्तन' के संदेश को सोशल मीडिया के माध्यम से समाज तक ले जाने का आह्वान किया।◆◆◆

हिमाचल की सामाजिक संरचना पर राष्ट्रीय चिंतनः दो दिवसीय परिसंवाद सम्पन्न

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.) द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद 'हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना: निरंतरता और परिवर्तन' का 8-9 नवंबर 2025 को उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। सरदार पटेल विश्वविद्यालय मण्डी, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र शिमला एवं नालन्दा कॉलेज ऑफ एजुकेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस सेमिनार में देशभर से 175 प्रतिभागियों—आचार्यों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों ने सहभागिता की और 7 तकनीकी सत्रों में कुल 68 शोधपत्र प्रस्तुत किए। समापन सत्र में मुख्य अतिथि उद्योगपति श्री प्रेम राणा ने शोध संस्थान की उपलब्धियों की सराहना करते हुए प्रदेश में आपदा प्रबंधन एवं पर्यावरण संरक्षण पर भी कार्य की आवश्यकता बताई। विशिष्ट अतिथियों ने हिमाचली लोकसंस्कृति और सामाजिक परिवर्तनों पर सारगर्भित चिंतन प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय संबोधन में श्री प्रकाश चंद शर्मा ने संस्थान की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। निदेशक डॉ. चेतराम गर्ग ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए संस्थान की शोध प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित किया।◆◆◆

राष्ट्रगीत वंदेमातरम् के 150 वर्ष

माननीय सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी का वक्तव्य

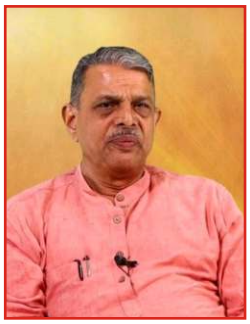

मातृभूमि की आराधना और संपूर्ण राष्ट्र जीवन में चेतना का संचार करने वाले अद्भुत मन्त्र 'वंदे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्रगीत के रचयिता श्रद्धेय बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। 1875 में रचित इस गीत को 1896 में कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रकवि श्रद्धेय रविंद्रनाथ ठाकुर ने सस्वर प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था। तब से यह गीत देशभक्ति का मंत्र ही नहीं अपितु राष्ट्रीय उद्घोष, राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्र की आत्मा की ध्वनि बन गया। तत्पश्चात् बंग-भंग आंदोलन सहित भारत के स्वाधीनता संग्राम के सभी सैनानियों का घोष मंत्र 'वंदे मातरम्' ही बन गया था। इस महामंत्र की व्यापकता को इस बात से समझा जा सकता है कि देश के अनेक विद्वानों और महापुरुषों जैसे महर्षि श्रीअरविंद, मैडम भीकाजी कामा, महाकवि सुब्रमण्यम भारती, लाला हरदयाल, लाला लाजपत राय आदि ने अपने पत्र पत्रिकाओं के नाम में वंदेमातरम् जोड़ लिया था। महात्मा गांधी भी अनेक वर्षों तक अपने पत्रों का समापन 'वंदे मातरम्' के साथ करते रहे।

'वंदे मातरम् राष्ट्र की आत्मा का गान है जो हर किसी को प्रेरणा देता है। वंदेमातरम् अपने दिव्य प्रभाव के कारण 150 वर्षों के बाद भी संपूर्ण समाज को राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना से ओत-प्रोत करने की सामर्थ्य रखता है। आज जब क्षेत्र, भाषा, जाति आदि संकुचितता के आधार पर विभाजन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब 'वंदे मातरम्' वह सूत्र है, जो समाज को एकता में बांधकर रख सकता है। भारत के सभी क्षेत्रों, समाजों एवं भाषाओं में इसकी सहज स्वीकृति है। यह आज भी समाज की राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पहचान और एकात्म भाव का सशक्त आधार है। राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण और राष्ट्र निर्माण की इस पावन बेला में इस महामंत्र के भावों को हृदयंगम करने की आवश्यकता है। 'वंदे मातरम्' गीत की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सभी स्वयंसेवकों सहित सम्पूर्ण समाज से आह्वान करता है कि वंदे मातरम् की प्रेरणा को प्रत्येक हृदय में जागृत करते हुए 'स्व' के आधार पर राष्ट्र निर्माण कार्य हेतु सक्रिय हों और इस अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भागीदारी करें।◆◆◆

युविका शर्मा, अक्षिता और सक्षम ने हिमाचल का परचम लहराया

सरस्वती विद्या मंदिर कुमारसैन के छात्र-छात्राओं ने प्राप्त किया उत्तर भारत स्तरीय संगणक क्विज़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

सरस्वती विद्या मंदिर कुमारसैन के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का परचम लहराते हुए प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया है। विद्यालय की छात्राएं युविका शर्मा, अक्षिता एवं छात्र सक्षम ने चंडीगढ़ स्थित शारदा निकेतन सर्वहितकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित उत्तर भारत स्तरीय गणित, विज्ञान एवं संगणक मेला में संगणक क्विज़ प्रतियोगिता के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतिस्पर्धा में अपनी गहरी समझ, त्वरित निर्णय क्षमता और अद्वितीय टीमवर्क के बल पर कुमारसैन की इस प्रतिभाशाली टीम ने सभी राज्यों को पीछे छोड़ते हुए हिमाचल प्रदेश के लिए गौरवपूर्ण प्रथम स्थान हासिल किया। विद्यालय के अध्यापक सुनील शर्मा ने बताया कि इन बच्चों की मेहनत, समर्पण और शिक्षकों के मार्गदर्शन ने यह उपलब्धि संभव बनाई है। विद्यालय के प्रधानाचार्य यशवंत भारद्वाज ने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि 'यह उपलब्धि न केवल सरस्वती विद्या मंदिर कुमारसैन के लिए बल्कि संपूर्ण हिमाचल शिक्षा समिति और विद्या भारती परिवार के लिए गर्व का विषय है।◆◆◆

युवा शक्ति जागृत हो
तभी राष्ट्र का भविष्य सशक्त होगा

खंड पटलांदर, हमीरपुर में आयोजित भव्य हिंदू सम्मेलन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर समाजिक चेतना, सेवा और सांस्कृतिक गौरव का प्रेरक केंद्र बना। मुख्य अतिथि स्वामी सर्वेश्वरानंद सरस्वती और प्रांत संघचालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा जी के मार्गदर्शन ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। शहीद परिवारों का सम्मान, महिला मंडलों की भजन प्रस्तुतियां और खेल व शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभाओं का अभिनंदन—इन सभी ने समाज में उत्साह और गर्व का संचार किया। विशेष रूप से 20 वर्षों से नि:शुल्क शिक्षा दे रहे समर्पित अध्यापक का सम्मान कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता रहा। स्वामी सर्वेश्वरानंद जी ने युवाओं से राष्ट्रहित में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया, जबकि प्रो. रांगड़ा जी ने संगठन और समरसता के महत्व पर प्रकाश डाला। 1174 लोगों की सहभागिता से सम्पन्न यह सम्मेलन समाज में एकता, संस्कार और सेवा की भावना को पुनर्जीवित करने वाला ऐतिहासिक आयोजन सिद्ध हुआ।◆◆◆

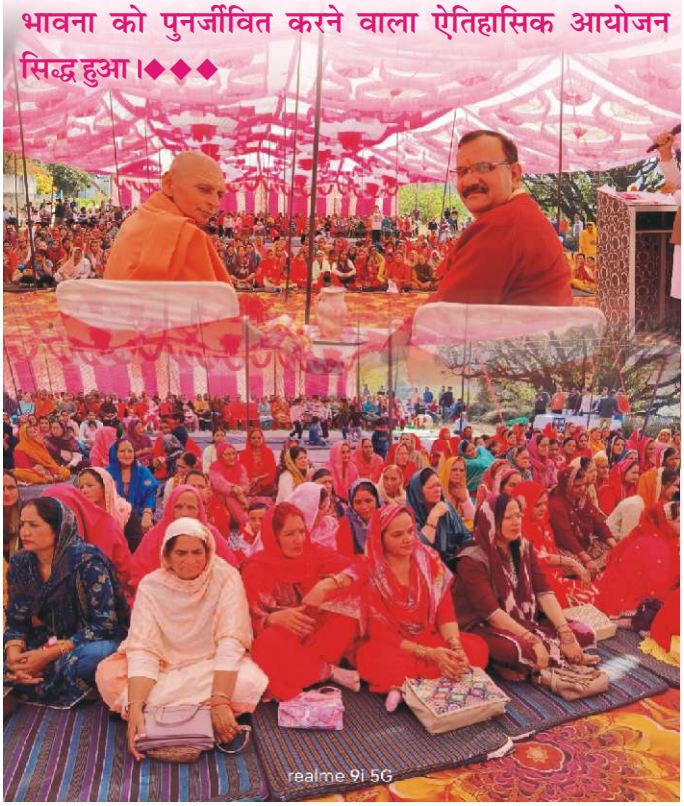

हिंदू जागरण का संकल्प
समरस समाज का निर्माण

ज्वालामुखी के भड़ोली कुटियारा में आयोजित विशाल हिंदू धर्म सभा महासम्मेलन समाज जागरण, एकता और सांस्कृतिक चेतना का प्रेरक मंच सिद्ध हुआ। गुगा मंदिर के पुजारी विपन कुमार के मार्गदर्शन में सम्पन्न इस आयोजन में मुख्य वक्ता जसवंत खत्री ने सनातनी युवाओं से स्वरोजगार अपनाने का आह्वान किया तथा पंच परिवर्तन—सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य और स्व-बोध पर विस्तृत प्रकाश डाला। राधा स्वामी सत्संग व्यास से श्री विजय राणा ने सनातन धर्म को संस्था की मूल भावना बताया, जबकि अधिवक्ता कश्मीर भारती ने धर्म और पंथ के अंतर को समझने तथा ऐसे सम्मेलनों के निरंतर आयोजन पर बल दिया। मंच की अध्यक्षता नीरज राणा ने की। सम्मेलन में स्थानीय जनमानस ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, यज्ञ और भजन-कीर्तन में शामिल होकर आध्यात्मिक वातावरण को और समृद्ध किया। प्रसिद्ध गायक पम्मी ठाकुर के राम भजनों ने सभी को भावविभोर कर दिया। कुल 2500 प्रतिभागियों की उपस्थिति ने सम्मेलन को अत्यंत सफल और स्मरणीय बनाया।◆◆◆

देवभूमि हिमाचल में बढ़ते अपराध

देवभूमि हिमाचल अध्यात्म, धर्म और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जानी जाती रही है। परंतु वर्तमान में हत्या, बलात्कार और चोरी की घटनाओं के बढ़ने से अराजकता की खबरें भी मीडिया में आने लगी हैं, जो कि एक चिंता का विषय है। हिमाचल प्रदेश में हत्या और बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि हुई है। पिछले दिनों रोहड़ू में भी एक नवयुवक द्वारा आत्महत्या किए जाने से सामाजिक विसंगतियों का सच सामने आया था। इसके अलावा ऊना जिले में नाबालिग लड़की से बलात्कार और धमकी की गंभीर घटना भी हुई है। इस स्थिति को देखते हुए महिला सुरक्षा और कानून व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं और आवश्यक कदम उठाने की मांग बढ़ रही है। हमीरपुर में एक महिला को एक लड़के द्वारा छेड़खानी करने के बाद मौत के घाट उतार डाला। प्रदेश में कई स्थानों पर मारपीट, लूटपाट, हत्या, बलात्कार की घटनाएं निरंतर सामने आ रही हैं। हिमाचल में बढ़ती हत्या और बलात्कार की घटनाएं राज्य में सामाजिक और सुरक्षा चुनौतियों को उजागर करती हैं, जिनके लिए कड़क कानून और जागरूकता आवश्यक है।

पुलिस रिपोर्ट और विभिन्न खबरों के अनुसार, प्रदेश में अब तक हत्या, बलात्कार, महिलाओं के प्रति अपराध और अन्य आपराधिक घटनाओं की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ी है। मुख्य कारणों में सामाजिक परिवर्तन, पुलिस रिपोर्टिंग की बेहतर सुविधा, जनसंख्या में वृद्धि, और कभी-कभी प्रशासनिक और पुलिस की कमजोर व्यवस्था शामिल हैं। महिलाएं अब भी असुरक्षित हैं और अपराधी बेखौफ हो गए हैं। इन अपराधों के पीछे सामाजिक आर्थिक बदलाव, जागरूकता की कमी, कानून व्यवस्था की चुनौतियां और अपराधियों की बढ़ती हिम्मत मुख्य कारण हैं। प्रदेश की पुलिस और सरकार द्वारा सुरक्षा उपायों के बावजूद अपराध की संख्या में कमी नहीं आ पाई है, जिससे महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। हिमाचल में हत्या और बलात्कार के मामलों में बढ़ोतरी के पीछे सामाजिक, प्रशासनिक और कानूनी चुनौतियां हैं, जिनके लिए तत्काल सख्त और प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है।

वैसे हिमाचल को आमतौर पर एक शांतिपूर्ण राज्य माना जाता है, लेकिन इन आंकड़ों तथा वारदातों से यह स्पष्ट होता है कि राज्य में भी गंभीर अपराध हुए हैं, खासकर महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कुछ गंभीर घटनाएं भी सामने आई हैं। ये आंकड़े हिमाचल प्रदेश में कानून व्यवस्था और महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे पर चिंता जताते हैं। इसलिए इनके निवारण के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

इन दिनों सोलन में हुई मारपीट के दृश्य भयभीत करने वाले हैं। कहीं जमीन के विवाद पर हो रही मारपीट, कहीं जातिवाद के नाम पर समाज में फैली त्रासदी और कहीं प्रेम प्रसंग तथा बलात्कार और हत्या किए जाने के मामले सामने आ रहे हैं। यह संभव है कि सोशल मीडिया की ताकत और पुलिस में मामले दर्ज करवाए जाने से अधिक मामले सामने आने लगे हैं लेकिन यह भी सच है कि समाज में हो रही विसंगतियां और बदलता चिंतन, जीवन पद्धति, लूटपाट, चोरी चकारी, हत्या, आगजनी के मामले बढ़ते जा रहे हैं। दरअसल कानून व्यवस्था की कमियों के चलते अपराधियों को बेल मिल जाती है। उन्हें घर परिवार और समाज द्वारा बचाए जाने का प्रयास किया जाता है। और कुछ एक को तो राजनीतिक संरक्षण भी मिल जाता है। इसलिए दंड व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है और कुछ दिनों की सजा हो भी जाए तो जेल से बाहर आने के बाद भी वह व्यक्ति अपराधी मनोवृत्ति को नहीं छोड़ पाता है क्योंकि उसे मालूम है कि कोर्ट कचहरी की मशक्कत और जेल में रहने के बाद बाहर आकर फिर वही जिंदगी के नजारे लेने का मजा उसे मिल ही जाएगा यह एक त्रासदी है। ◆◆◆

आकाश की ऊँचाइयों पर आत्मनिर्भर भारत की नई उड़ान

शशांक द्विवेदी

बुलंदियों का सफर और इसरो : सबसे भारी संचार उपग्रह CMS-03 का सफल प्रक्षेपण

भारत ने एक बार फिर अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता का शानदार प्रदर्शन किया है। 2 नवंबर 2025 की रात श्रीहरिकोटा से इसरो ने अपने अब तक के सबसे भारी संचार उपग्रह CMS-03 (GSAT-7R) को LVM3-M5 रॉकेट के माध्यम से सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेजा। लगभग 4.4 टन वजनी यह उपग्रह भारत की सामरिक और डिजिटल संप्रभुता का नया प्रतीक बन गया है।

भारत का सबसे भारी संचार उपग्रह : CMS-03, अब तक का भारत द्वारा प्रक्षेपित सबसे भारी संचार उपग्रह है। इसे जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (GTO) में स्थापित किया गया है, जहाँ से यह अगले 12 से 15 वर्षों तक देश के संचार नेटवर्क को मजबूत बनाए रखेगा। यह मिशन GSAT-7 श्रृंखला का विस्तार है, जो भारतीय नौसेना, वायुसेना और अन्य रक्षा एजेंसियों को सुरक्षित और निर्बाध संचार प्रदान करता है। पूर्ववर्ती उपग्रह GSAT-7 (रुक्मिणी) और GSAT-7 के बाद CMS-03 को 'नेक्स्ट-जनरेशन सैटेलाइट' माना जा रहा है, जो अधिक बैंडविड्थ, व्यापक कवरेज और अत्याधुनिक तकनीक से लैस है।

विज्ञान और रणनीति का संगम : CMS-03 भारत की सामरिक संचार प्रणाली की एक मजबूत कड़ी है। यह उपग्रह HF, S-बैंड, C-बैंड और Ku-बैंड जैसी बहु-आवृत्ति तकनीक से सुसज्जित है, जिससे यह समुद्री, हवाई और जमीनी अभियानों के बीच निर्बाध संचार सुनिश्चित करता है। इसमें प्रयुक्त बीम स्टीयरिंग तकनीक उपग्रह को अपने संचार बीम को आवश्यक दिशा में मोड़ने की क्षमता देती है, जिससे गतिशील जहाजों और विमानों से निरंतर संपर्क बना रहता है।

भारतीय महासागर में सशक्त उपस्थिति : CMS-03 से भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में रणनीतिक बढ़त मिलेगी। यह उपग्रह भारत को समुद्री सीमाओं की निगरानी, तटीय सुरक्षा और समुद्री आपात स्थितियों में त्वरित संचार जैसी क्षमताएँ प्रदान करेगा।

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव : यह सफलता केवल रक्षा क्षेत्र तक सीमित नहीं है। CMS-03 दूरस्थ तटीय क्षेत्रों, द्वीपों और सीमांत इलाकों में ब्रॉडबैंड और इंटरनेट कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएगा। इससे डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस और समुद्री शिक्षा जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाएँ खुलेंगी। इसरो की यह उपलब्धि भारत को 'स्पेस टेक्नोलॉजी एक्सपोर्टर' राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ाती है, जिससे वैश्विक उपग्रह संचार बाजार में भारत की भागीदारी बढ़ेगी।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कदम : CMS-03 का सफल प्रक्षेपण 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करता है। भारत अब विदेशी सैटेलाइट नेटवर्क पर निर्भर हुए बिना स्वयं उच्च क्षमता वाले उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित करने में सक्षम है। तीन चरणों वाले LVM3-M5 रॉकेट ठोस (S200), तरल (L110) और क्रायोजेनिक (C25) की सफलता ने यह सिद्ध किया है कि भारत 4-5 टन से अधिक वजन वाले उपग्रहों को पूर्णत: स्वदेशी तकनीक से प्रक्षेपित कर सकता है।

भविष्य की ओर संकेत : आने वाले वर्षों में इसरो CMS-04 (GSAT-20) और नए नेविगेशन सैटेलाइट्स लॉन्च करने की तैयारी में है। ये मिशन भारत को एकीकृत संचार और नेविगेशन नेटवर्क प्रदान करेंगे। साथ ही, गगनयान मानव मिशन और भारतीय स्पेस स्टेशन जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिए भी LVMx रॉकेट एक विश्वसनीय आधार बन चुका है। CMS-03 का प्रक्षेपण यह साबित करता है कि भारत केवल 'अंतरिक्ष तक पहुँचने वाला देश' नहीं, बल्कि 'अंतरिक्ष को साधने वाला राष्ट्र' बन चुका है। यह मिशन भारत की सामरिक सुरक्षा, डिजिटल संचार और तकनीकी प्रगति का प्रतीक है।◆◆◆

भारत ने जीता महिला कबड्डी विश्व कप

हिमाचल की पांच बेटियों ने जमाई धाक

द्वितीय महिला कबड्डी विश्व कप 2025 में भारतीय महिला कबड्डी टीम ने अपने शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए सोमवार को फाइनल मुकाबले में चाइनीज ताइपे को हराकर इतिहास रच दिया। भारतीय महिला कबड्डी टीम ने द्वितीय महिला कबड्डी विश्व कप 2025 का खिताब अपने नाम कर लिया। 24 नवम्बर को खेले गए रोमांचक फाइनल मुकाबले में भारत ने चाइनीस ताइपे को 35-28 से पराजित कर लगातार दूसरे विश्व कप में विजेता बनने का गौरव हासिल किया। भारतीय टीम ने मैच की शुरुआत से ही दबदबा बनाते हुए रेडिंग और डिफेंस दोनों में शानदार तालमेल दिखाया। पहले हाफ में हल्की बढ़त बनाने के बाद टीम ने दूसरे हाफ में आक्रामक खेल के दम पर चाइनीस ताइपे को वापसी का मौका नहीं दिया।

विश्व कबड्डी चैंपियन - हिमाचल की पांच शेरनियां

पूरे टूर्नामेंट में अनुशासित, आक्रामक और संतुलित खेल दिखाने वाली भारतीय टीम खिताबी मुकाबले में चाइनीज ताइपे से आमने-सामने हुई। टीम का मार्गदर्शन मुख्य कोच तेजस्वी और सहायक कोच प्रियंका ने किया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि में हिमाचल प्रदेश की पांच खिलाड़ियों का योगदान बेहद महत्वपूर्ण रहा। भारतीय टीम की कप्तान रितु नेगी और उप कप्तान पुष्पा राणा हिमाचल से हैं। इनके अलावा चंपा ठाकुर, भावना ठाकुर और साक्षी शर्मा ने भी पूरे टूर्नामेंट में दमदार प्रदर्शन करते हुए टीम की सफलता में अहम भूमिका निभाई। कप्तान रितु नेगी ने मैच दर मैच रणनीति, संतुलन और नेतृत्त्व क्षमता का स्तर ऊंचा बनाए रखा, जबकि उपकप्तान पुष्पा राणा ने अपनी तेजतर्रार रेडिंग और शानदार डिफेंस से विरोधी टीमों को मुश्किल में डाला। हिमाचल की इन पांच खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने टीम की ताकत की कई गुना बढ़ाया है। पूरे टूनमिंट में भारतीय टीम ने हर मैच में अनुशासन, आक्रामकता और टीमवर्क का बेहतरीन संतुलन दिखाया। रविवार को ईरान के खिलाफ सेमीफाइनल में शुरुआती मिनटों से ही भारतीय खिलाड़ी दबदबा बनाए रहीं। रेडिंग, डिफेंस और ऑलआउट की रणनीतियों ने विपक्षी टीम को उबरने का मौका नहीं दिया। भारतीय टीम की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हिमाचल प्रदेश कबड्डी संघ के महासचिव कुलदीप राणा ने टीम और प्रदेश की खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिमाचल की बेटियों ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने उत्कृष्ट खेल से प्रदेश का मान बढ़ाया है। कहा कि कप्तान रितु नेगी और उपकप्तान पुष्पा राणा के नेतृत्व में भारतीय टीम ने अनुशासित, आक्रामक और संतुलित खेल का प्रदर्शन किया है।◆◆◆

कर्ण सिंह की अनोखी पहल

गोबर से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ला रहे नई क्रांति

हिमाचल प्रदेश की सुंदर वादियों में बसे मंडी जिले के कोटली उपमंडल के एक छोटे से गांव चलोह के निवासी कर्ण सिंह आज प्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर में अपने अनोखे और प्रेरणादायक कार्य के लिए जाने जा रहे हैं। जहाँ लोग गोबर को फेंक देते हैं, वहीं कर्ण सिंह ने उसी गोबर को अपनी मेहनत और नवाचार से कीमती उत्पादों में बदल दिया है। उनकी सोच है कि गांव की गाय-भैंस सिर्फ दूध ही नहीं देतीं, बल्कि आत्मनिर्भरता का रास्ता भी दिखाती है।

कर्ण सिंह ने वर्ष 2023 में यह महसूस किया कि गांवों में गोबर की बड़ी मात्रा व्यर्थ जा रही है। पारंपरिक रूप से इसका उपयोग खाद या ईंधन के रूप में होता आया है, परंतु आधुनिक तकनीक से इसे अनेक उपयोगी वस्तुओं में बदला जा सकता है। इसी सोच के साथ उन्होंने गोबर से जैविक खाद, दीये, धूपबत्ती, गोबर पेंट, राखी, गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियाँ, और बायो-एनर्जी ब्रिकेट्स बनाना शुरू किया। शुरुआत में ग्रामीणों ने इसे मज़ाक समझा, लेकिन जब उनके उत्पादों की माँग स्थानीय मेलों और प्रदर्शनियों में बढने लगी, तब सभी को उनके कार्य की उपयोगिता का एहसास हुआ। कर्ण सिंह ने अपने स्तर पर एक 'गोबर रिसोर्स सेंटर' की स्थापना की, जहाँ स्थानीय युवाओं और महिलाओं को इन उत्पादों के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस पहल से आज दर्जनों परिवारों को रोजगार मिला है और किसानों की अतिरिक्त आमदनी का नया स्रोत भी तैयार हुआ है। उनकी इस मुहिम का दूसरा बड़ा पहलू पर्यावरण संरक्षण है। गोबर आधारित उत्पादों के प्रयोग से प्लास्टिक और रासायनिक वस्तुओं की जगह प्राकृतिक और जैविक विकल्प सामने आए हैं। कर्ण सिंह कहते हैं कि यदि हम प्रकृति के साथ चलना सीख लें, तो न तो कचरा रहेगा, न बेरोजगारी।

कर्ण सिंह की कहानी इस बात का प्रतीक है कि बड़ा परिवर्तन किसी बड़ी पूँजी से नहीं, बल्कि बड़ी सोच से शुरू होता है। उन्होंने यह साबित किया है कि मेहनत, धैर्य और लगन से एक साधारण व्यक्ति भी समाज और पर्यावरण दोनों के लिए प्रेरणा बन सकता है। ◆◆◆

विकसित भारत निर्माण में आईआईटी मंडी का अहम योगदान

ऑपरेशन सिंदूर में सेना को भेजे थे 16 ड्रोन

आईआईटी मंडी ने अपने 16 वर्षों की यात्रा के दौरान कई उपलब्धियों हासिल की हैं। संस्थान की ड्रोन टेक्नोलॉजी लैब प्रौद्योगिकी के दौर में नित नए आयाम छू रही है, यही कारण है जब भारतीय सेना द्वारा इसी वर्ष मई 2025 में पाकिस्तान के खिलाफ चलाये गए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान ड्रोन की आवश्यकता आन पड़ी तो आईआईटी मंडी ने भी इस ऑपरेशन के लिए यहां से 16 ड्रोन भेजे। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा ने संस्थान के 13वें दीक्षांत समारोह के उपरांत मीडिया से बातचीत में कहा कि **भारत को समृद्ध बनाने के लिए आईआईटी मंडी व ड्रोन टेक्नोलॉजी लैब डीआरडीओ मिलकर कार्य कर रहे हैं।** प्रोफेसर शेखर मांडे महानिदेशक वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के अनुसार देश आज विकसित भारत का सपना लेकर आगे बढ़ रहा है और ऐसे में सभी को इस सपने को साकार करने अहम भूमिका निभानी चाहिए।

इस दीक्षांत समारोह में प्रो. शेखर सी. मांडे, पूर्व महानिदेशक, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), मुख्य अतिथि के रूप में शामिल रहे। वहीं समारोह में डॉ. जगन्नाथ नायक, निदेशक, सेंटर फॉर हाई एनर्जी सिस्टम्स एंड साइंसेज (चेस), डीआरडीओ, और प्रो. बुदराजू श्रीनिवास मूर्ति, निदेशक, आईआईटी हैदराबाद विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इस समारोह में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्ट्रेट कार्यक्रमों के कुल 604 छात्रों को उपाधियां प्रदान की गई। जिनमें 292 स्नातक, 241 स्नातकोत्तर और 71 पीएचडी के शोधार्थी शामिल रहे। इसके अतिरिक्त, अकादमिक उत्कृष्टता, शोध, नवाचार और नेतृत्व में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए कई पदक और पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

संस्थान के आपदा प्रबंधन और जलवायु नियंत्रण केंद्र को टाटा ट्रस्ट की और से हिमाचल में लैंडस्लाइड व भूकंप की घटनाओं पर शोध कार्य करने के लिए 20 करोड़ का अनुदान भी प्राप्त हुआ है। जिसे भूकंप रोधी भवनों, पुलों व आपदा प्रबंधन सहित अन्य शोध पर खर्च किया जाएगा।◆◆◆

संत-सिपाही गुरु गोबिन्द सिंह

त्याग, वीरता और धर्म रक्षा के अमर प्रतीक

गुरु गोविन्द सिंह का जन्म 22 दिसम्बर 1666 को पटना में नौवें सिख गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी और माता गुजरी के घर हुआ था। पटना में जिस घर में उनका जन्म हुआ था और जिसमें उन्होने अपने प्रथम चार वर्ष बिताये , वहीं पर अब तखत श्री हरिमंदर जी पटनासाहिब स्थित है। 1670 में उनका परिवार फिर पंजाब आ गया मार्च 1672 में उनका परिवार हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों में स्थित चक्क नानकी नामक स्थान पर आ गया। चक्क नानकी ही आजकल आनन्दपुर साहिब कहलता है। यहीं पर उन्होंने फारसी, संस्कृत की शिक्षा ली और एक योद्धा बनने के लिए सैन्य कौशल सीखा। कश्मीरी पंडितों का को इस्लाम बनाए जाने के विरोध में संघर्ष किया। वैशाखी के दिन 29 मार्च 1676 को गोविन्द सिंह सिखों के दसवें गुरु घोषित हुए। 1684 में उन्होने चण्डी दी वार की रचना की।

वर्ष 1685 तक वह यमुना नदी के किनारे पांवटा में गुरु जी लगभग तीन साल के लिए रहे और कई ग्रंथों की रचना की। सन् 1687 में नादौन की लड़ाई में, गुरु गोबिंद नादौन में व्यास नदी के तट पर गुरु गोबिंद सिंह जी आठ दिनों तक रहे और विभिन्न सैन्य प्रमुखों का दौरा किया। भंगानी के युद्ध के कुछ दिन बाद बिलासपुर की विधवा रानी चंपा के वापस लौटने के अनुरोध को स्वीकार करके नवंबर 1688 में वापस आनंदपुर साहिब पहुंच गये। गुरु गोबिंद सिंह जी ने सन् 1699 में बैसाखी के दिन एक लोहे का कटोरा लिया और उसमें पानी और चीनी मिला कर दुधारी तलवार से घोल कर अमृत छकाया तथा केश, कंघा, कड़ा, किरपान, कच्चेरा पांच ककारों का महत्व खालसा के लिए समझाया। 8 मई सन् 1705 में श्मुक्तसरश् युद्ध में मुगलों पर गुरुजी की जीत हुई। अक्टूबर सन् 1706 में गुरुजी दक्षिण में गए। औरंगजेब की मृत्यु के बाद गुरुजी के बहादुरशाह के मधुर संबंधों को देखकर सरहद के नवाब वजीत खाँ ने दो पठानों से गुरुजी पर धोखे से घातक वार किया, जिससे 7 अक्टूबर 1708 में गुरुजी (गुरु गोबिन्द सिंह जी) नांदेड साहिब में दिव्य ज्योति में लीन हो गए। गुरु गोबिन्द सिंह ने पवित्र (ग्रन्थ) गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया तथा उन्हें गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होने अन्याय, अत्याचार और पापों को खत्म करने के लिए और धर्म की रक्षा के लिए मुगलों के साथ 14 युद्ध लड़े। धर्म की रक्षा के लिए समस्त परिवार का बलिदान किया, जिसके लिए उन्हें श्सरबंसदानीश् भी कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त जनसाधारण में वे कलगीधर, दशमेश, बाजांवाले, आदि कई नाम, उपनाम व उपाधियों से भी जाने जाते हैं। वे भक्ति तथा शक्ति के अद्वितीय संगम थे। इसीलिए उन्हें श्संत सिपाहीश् भी कहा जाता है। उन्होंने सदा प्रेम, सदाचार और भाईचारे का सन्देश दिया- भै काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन। अंत समय में सिक्खों को गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानने को कहा। गुरुजी सिंखों के दसवें गुरु होने का साथ-साथ एक महान योद्धा, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता, मौलिक चिन्तक व संस्कृत, ब्रजभाषा, फारसी सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे। वे बाल्यकाल से ही सरल, सहज, भक्ति-भाव वाले कर्मयोगी थे। जापु साहिब या जाप साहिब, दशम ग्रन्थ की प्रथम वाणी है। अकाल स्तुति रू ईश्वर की सर्वव्यापकता का चित्रण करती कृति अकाल स्तुति, जीवन कथा बचित्तर नाटक, देवी की उपासना से संबंधित चंडी चरित और चंडी दी वार, खालसा महिमा रू खालसा की परिभाषा और खालसा के कृतित्व आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं उनके उपदेश शिक्षाएं और संघर्षशील आदर्श जीवन चरित्र आज भी सभी के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्रोत है।◆◆◆

मुस्लिम पक्ष द्वारा कोर्ट की अवमानना

अदालत ने दिए हैं संजौली मस्जिद गिराने के आदेश

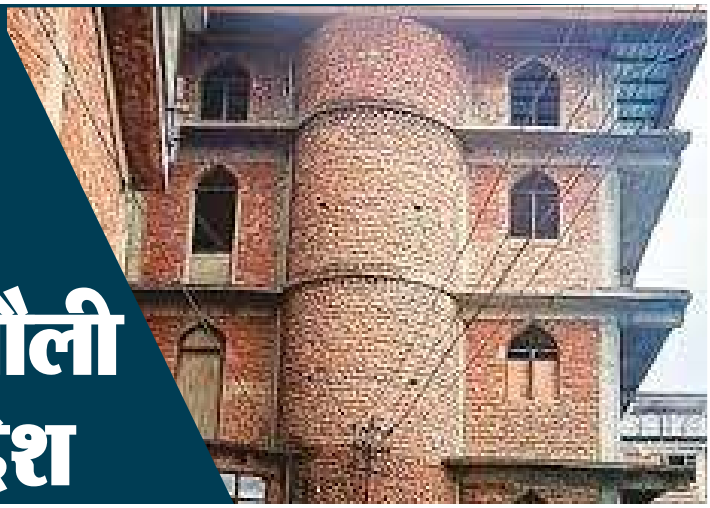

राजधानी शिमला के संजौली क्षेत्र में विवादित मस्जिद के अवैध निर्माण को लेकर जिला अदालत ने बड़ा फैसला सुनाया है। अदालत ने नगर निगम आयुक्त की अदालत (एमसी कोर्ट) द्वारा 3 मई 2025 को दिए गए आदेश को बरकरार रखते हुए मस्जिद की निचली दो मंजिलों को गिराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, अदालत ने हिमाचल प्रदेश वक्फ बोर्ड और मस्जिद कमेटी की याचिकाओं को खारिज करते हुए कहा कि यह निर्माण बिना वैध अनुमति के किया गया है और यह नगर निगम के निर्माण नियमों का स्पष्ट उल्लंघन करता है।

जिला अदालत ने अपने आदेश में कहा कि 'मस्जिद का निर्माण नगर निगम शिमला से अनुमति लिए बिना किया गया है। इस प्रकार यह भवन उपयुक्त कानूनी प्रक्रिया के बिना खड़ा किया गया है, जो स्पष्ट रूप से नगर निगम अधिनियम का उल्लंघन है। एमसी कोर्ट द्वारा पहले पारित आदेश सही हैं और उन्हें यथावत रखा जाएगा'। संजौली मस्जिद का निर्माण लंबे समय से विवादों में रहा है। वर्ष 2024 में नगर निगम शिमला ने मस्जिद परिसर में किए गए अतिरिक्त निर्माण को लेकर जांच शुरु की थी। 5 अक्टूबर, 2024 को एमसी कोर्ट ने इस निर्माण को अवैध घोषित करते हुए ऊपरी मंजिलों को गिराने का आदेश दिया था। इसके बाद 3 मई 2025 को नगर निगम आयुक्त ने मस्जिद की निचली दो मंजिलों को भी गैरकानूनी करार देते हुए ध्वस्तीकरण का आदेश जारी किया है। इन आदेशों के खिलाफ हिमाचल वक्फ बोर्ड और मस्जिद कमेटी ने जिला अदालत में अपील दायर की थी। उनका कहना था कि निर्माण धार्मिक संस्था के अंतर्गत आता है और इसे वक्फ बोर्ड की देखरेख में वैध माना जाना चाहिए। हालांकि, अदालत ने पाया कि वक्फ बोर्ड द्वारा कोई भी मान्य अनुमति या स्वीकृति दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए गए। अदालत ने यह भी कहा कि धार्मिक संस्थानों को भी निर्माण संबंधी नियमों का पालन करना अनिवार्य है। जिला अदालत के निर्णय के तुरंत बाद देवभूमि संघर्ष समिति और कई स्थानीय संगठनों ने इसे कानून की जीत बताया। समिति के सदस्यों ने संजौली क्षेत्र में लड्डू बांटकर खुशी जाहिर की और कहा कि यह फैसला न्यायपालिका में जनता के विश्वास को मजबूत करता है। समिति के अध्यक्ष जगत पाल ने कहा, कोई भी संस्था कानून से ऊपर नहीं है। अवैध निर्माण, चाहे वह किसी भी मत या समुदाय से जुड़ा हो, उसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उल्लेखनीय है कि यह मामला 2024 में तब सुर्खियों में आया जब मल्याणा-संजौली क्षेत्र में एक झगड़े के बाद दो समुदायों के बीच तनाव बढ़ गया था। उस समय मस्जिद परिसर में कुछ युवकों के छिपने की अफवाहें फैलने से माहौल गर्म हो गया था। इसके बाद स्थानीय संगठनों ने प्रदर्शन किए और अवैध निर्माण को लेकर आक्रोशित जनता को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को वाटर कैनन और हल्का बल प्रयोग करना पड़ा था। तब से यह अवैध मस्जिद प्रशासनिक और सामाजिक विवादों में है। इस बीच कई बार निगम आयुक्त कोर्ट में भी मामलों की सुनवाई हुई और इस मस्जिद निर्माण को अवैध ठहराते हुए इसे गिराने के आदेश हुए थे। बहरहाल अदालत ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह निर्माण वैध अनुमति के बिना किया गया है, जो कि एमसी एक्ट के नियमों का उल्लंघन है, इसे तुरंत गिराया जाए। कोर्ट आदेशों के बाद भी मुस्लिम समुदाय के लोग नमाज अता करने के लिए आए, जिन्हें स्थानीय हिन्दू महिलाओं द्वारा पुलिस की उपस्थिति में वापस भेज दिया गया। कुछ दिनों के विरोध एवं संघर्ष के बाद फिलहाल मामला शांत हो गया है। ◆◆◆

अम्लपित्त का (Gastritis) आयुर्वेदिक उपचार

डॉ. लवनीश वैद
रत्याल-कांगड़ा

अम्लपित्त आज की जीवनशैली से जुड़ा एक अत्यंत सामान्य विकार है, जिसमें अतिरिक्त अम्ल स्त्राव, अन्नपाचन में दोष, एवं मनोवैज्ञानिक तनाव महत्वपूर्ण कारण माने जाते हैं। आयुर्वेद में इसे मुख्यतः पित्त-दोष की विकृति एवं अग्निमांद्य के परिणामस्वरूप उत्पन्न रोग माना गया है।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण (Ayurvedic Perspective)

आयुर्वेद में अम्लपित्त के मुख्य कारण

अत्यधिक अम्लीय, तैलीय, तीक्ष्ण व बोझिल भोजन, अनियमित भोजन, उपवास के बाद भारी भोजन, मानसिक तनाव, क्रोध, रात्रि जागरण, अग्निमांद्य (कमज़ोर पाचन अग्नि)

मुख्य लक्षण :

- खट्टी डकारें, सीने में जलन, ऊपरी पेट में दर्द/जलन, मन्दाग्नि, अपच, उल्टी अथवा मिचली

निदान (Diagnosis)

- लक्षण-आधारित आकलन
- आयुर्वेदिक दोष-दुष्टि विश्लेषण

आवश्यकता अनुसार मॉडर्न टेस्ट:

- एंडोस्कोपी, HPylori टेस्ट, CBC, LFT

आयुर्वेदिक प्रबंधन (Ayurvedic Management of Amlapitta)

1. पथ्य-अपथ्य (Diet & Lifestyle Management)

- पथ्य (What to Take)
- हल्का, सुपाच्य भोजन, मूंग की दाल, खिचड़ी, ठंडा दूध, घी (अल्प मात्रा में), नारियल पानी, पका हुआ केला, सौंफ, मिश्री, जीरा पानी, ब्यूट termilk (छाछ) - जीरा + पुदीना के साथ

अपथ्य (What to Avoid)

- चाय-कॉफी का अधिक सेवन, अत्यधिक खट्टा, मसालेदार, तला भोजन, लाल मिर्च, सिरका, धूम्रपान, शराब, जंक फूड, देर रात खाना, तनाव, क्रोध।

2. आहार चिकित्सा (Dietary Therapy)

तकोदम्लन (Alkaline diet): दूध, घी, नारियल पानी
मन्दाग्नि निवारण : अदरक-सोंठ की अल्प मात्रा
अम्लता शमन : धनेशोर पानी, बेल शर्बत
शीतल पथ्य : खीर (छोटी मात्रा), लस्सी, चावल

3. औषधि चिकित्सा (Ayurvedic Medicines)

- शामक औषधियां (To reduce acidity & burning)
- कमदुधा रस - पित्त शमन, शंख भस्म - अम्लता हर
- सूतशेखर रस - अजीर्ण एवं अम्लपित्त में श्रेष्ठ
- गिलोय सत्व - अग्नि-दीपन व पित्त-शमन

घृत (Medicated Ghee)

- महामंजिष्ठादि घृत
- सतावरी घृत - शीतल, अम्लता में लाभकारी

क्वाथ/चूर्ण : धात्री लौह, च्यवनप्राश (हल्का सेवन)
त्रिफला चूर्ण - रात में 1 चम्मच गुनगुने पानी के साथ

4. घरेलू उपचार (Home Remedies)

- एक चम्मच सौंफ + मिश्री भोजन के बाद, जीरा + सौंठ + धनिया का काढ़ा, सुबह खाली पेट एलोवेरा जूस, एक गिलास ठंडे दूध में 1 चम्मच घी, पतंजलि गुलकंद + दूध रात में (पित्त शांत करता है)

5. पंचकर्म चिकित्सा

अग्निमांद्य व पित्त-दोष में विशेष रूप से लाभकारी :

वमन (Therapeutic Emesis): तीव्र अम्लपित्त, बार-बार उल्टी, भारीपन होने पर

विरेचन (Purgation Therapy): पित्त प्रकोप का मुख्य उपचार, हल्का विरेचन - त्रिवृत लेह, अराग्वध

अभ्यंग + शिरोधारा

- तनाव-जनित अम्लपित्त में उत्कृष्ट, मन को शांति, पित्त शमन

योग एवं ध्यान (Yoga & Meditation)

वज्रासन-भोजन के बाद 10 मिनट, शीतली प्राणायाम-पित्त शांत, anulom-vilom-तनाव कम, ध्यान-मानसिक स्थिरता◆◆◆

सरदार वल्लभभाई पटेल का राष्ट्रनिर्माण में योगदान

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, इतिहास

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र-निर्माण के इतिहास में सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम अटूट राष्ट्रीय एकता, अनुशासित नेतृत्व और अदम्य राष्ट्रनिष्ठा के प्रतीक रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। 'लौह पुरुष' सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात में हुआ। 1910 में इंग्लैंड जाकर उन्होंने मिडल टेम्पल लॉ कॉलेज से कानून की पढ़ाई की और 1912 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर स्वदेश लौटे। 1918 में उन्होंने खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किया जो उनके संगठक कौशल और राजनीतिक सूझबूझ का पहला बड़ा प्रदर्शन था। किसानों के 'कर न देने' के आंदोलन ने उन्हें जनता के सच्चे नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया। 1919 में वे अहमदाबाद नगरपालिका समिति के अध्यक्ष बने और रॉलेट एक्ट के विरोध में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने 'सर्वोदय' नामक पत्रिका प्रारंभ कर जनजागरण को नया आयाम दिया।

1920-22 के दौरान सरदार पटेल ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया। 1920 के असहयोग आंदोलन में उन्होंने वकालत त्याग दी, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और खादी आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया और गुजरात विद्यापीठ की स्थापना में सहयोग दिया। 1928 का बारदोली सत्याग्रह उनके जीवन का ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुआ। जिसमें उन्होंने किसानों के अधिकारों के लिए बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व किया जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी पहचान का निर्णायक क्षण सिद्ध हुआ। उनके अहिंसक और दृढ़ नेतृत्व ने ब्रिटिश सरकार को झुकने पर विवश किया। इस विजय के उपरांत जनता ने उन्हें स्नेहपूर्वक 'सरदार' की उपाधि प्रदान की। बारदोली के बाद सरदार पटेल राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में आ गए। यही वह क्षण था जब वे जनता के 'वकील' से जनमानस के 'नेता' बने। उन्होंने 1930 के नमक सत्याग्रह, 1932 के सविनय अवज्ञा आंदोलन और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गांधीजी के विश्वसनीय सहयोगी एवं रणनीतिकार की भूमिका निभाई। । 1946 में अंतरिम सरकार में उन्हें गृह मंत्रालय सौंपा गया। स्वतंत्रता के उपरांत यही मंत्रालय उनके लौह-संकल्पित नेतृत्व का केंद्र बना।

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वे स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री और उपप्रधानमंत्री बने। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब भारत अनेक रियासतों और राजनीतिक इकाइयों में विभक्त था, तब सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी अद्वितीय संगठन-शक्ति और राजनीतिक दूरदृष्टि से 562 रियासतों का भारतीय संघ में विलय कर राष्ट्रीय एकता को साकार किया, जो विश्व इतिहास में संगठन और कूटनीति का अद्वितीय उदाहरण है। वी.पी. मेनन के सहयोग से उन्होंने 'संघटन और एकीकरण' की नीति अपनाई और रियासतों को या तो विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने या जनमत स्वीकारने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, हैदराबाद, जूनागढ़, कश्मीर और मणिपुर जैसे जटिल प्रश्नों का समाधान राष्ट्रीय हित में संभव हो सका। यह ऐतिहासिक कार्य उन्हें भारतीय राज्य-निर्माण का 'आर्किटेक्ट ऑफ यूनाइटेड इंडिया' बनाता है। गृह मंत्री और उपप्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने नवगठित राष्ट्र के प्रशासनिक ढाँचे, पुलिस प्रणाली, अखिल भारतीय सेवाओं और संविधान सभा की उपसमितियों में अमूल्य योगदान दिया। उनकी दृढ़ता, व्यवहारिकता और निर्णय क्षमता के कारण ही स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक नींव स्थिर हुई। उन्होंने कहा था 'मेरे लिए भारत केवल भूमि का टुकड़ा नहीं एक जीवंत चेतना है जिसकी एकता ही उसकी आत्मा है।'

1949 में उन्होंने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लेकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आधारशिला रखी। 1947 से 1950 तक का उनका कार्यकाल भारत के राजनीतिक एकीकरण, प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण और राष्ट्रीय एकता की दृढ़ स्थापना का काल है। 15 दिसंबर,1950 को बंबई में उन्होंने अंतिम श्वास ली, किंतु उनकी विचारधारा आज भी भारत की रीढ़ के रूप में जीवित है। सरदार पटेल का योगदान भारतीय इतिहास में साहस, संगठन और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय उदाहरण है। 2 जुलाई 1991 को नई दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण द्वारा देश के प्रति अद्वितीय सेवाओं के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल को मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। 31 अक्टूबर 2018 को उनकी स्मृति में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा का अनावरण हुआ, जो उनके लौह-संकल्प और राष्ट्रनिष्ठा का शाश्वत प्रतीक है।

उनके शब्दों में 'यदि भारत को सशक्त बनाना है तो हमें अपने कर्तव्यों को अधिकारों से पहले रखना होगा।' ◆◆◆

संकल्पनिष्ठ तपस्वी

श्री बलदेव सिंह परमार

– शिवा पंचकरण

संघ नींव मे विसर्जित पुष्पों के कार्य और विचार स्वयंसेवकों के मध्य एक प्रेरणा के रूप में प्रत्यक्ष रहता है, किन्तु उन पुष्पों का काल के चक्र में बंधे होने के कारण उनकी केवल स्मृतियाँ शेष रहती है। जो अगली पीढ़ी में ऊर्जा संचार और प्रेरणा का कार्य करती है। बलदेव सिंह परमार जी हिमाचल में संघ की नींव के वही पुष्प हैं जिनकी विचारों की स्मृति के रूप में आज नूरपुर में ठाकुर राम सिंह समारक एक अधिष्ठान के रूप मं खड़ा है।

बलदेव जी का जन्म 5 दिसंबर 1927 को पंजाब, महालपुर क्षेत्र के बीजों गाँव में पिता दौलत राम और माता पार्वती जी के यहां हुआ था। आपके पिता रेलवे की नौकरी करते थे। सामान्य घर से सम्बन्धित होने के बाद भी आप प्रतिभावान बालक थे। पिता जी रेलवे में थे जिस कारण आपका अधिकतर बचपन पंजाब, उत्तर प्रदेश के आगरा इत्यादि स्थानों में बीता। इन्हीं स्थानों में रहते हुए आपका संघ की शाखा में जाना हुआ। 1950 में दसवीं की पढ़ाई करते हुए संघ के वर्ग में जाना हुआ और उसके बाद आप संघ की ओर अधिक आकर्षित होने लगे। 1957 में नागपुर में होने वाले संघ के तृतीय वर्ष के वर्ग में गये। श्रीगुरु जी की प्रेरणा से आप इसके बाद अपना जीवन प्रचारक के रूप में संघ कार्य और समाज के लिए समर्पित कर दिया। आप अपने जीवन काल में पंजाब, हिमाचल, जम्मू कश्मीर और उत्तराखण्ड जैसे क्षेत्रों में रहे।

बलदेव सिंह परमार जी का जीवन संघ कार्य, अनुशासन, सेवा और इतिहास चेतना का अद्वितीय उदाहरण रहा। विविध प्रांतों में प्रचारक जीवन जीते हुए उन्होंने हिमाचल में वीर वजीर राम सिंह पठानिया की स्मृति को पुनर्जीवित करने और नूरपुर में समाजोपयोगी संस्थान खड़े करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आप कठोर अनुशासन किन्तु सबका ध्यान रखने बाले समर्पण के दिव्य प्रतीक थे। कहते हैं आप गलती करने पर गुस्सा करते थे किन्तु कुछ हि देर में व्यक्ति को बुला कर उसका मन ठीक कर देते थे। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को आपने जोड़ कर रखा हुआ था। बाहर से कठोर दिखने बाले बलदेव जी अंदर से बहुत ही कोमल स्वभाव बाले थे। दुर्गम क्षेत्रों में संघ कार्य करते हुए आपके जिम्मे इतिहास संकलन योजना का काम भी आया और ठाकुर राम सिंह जी के साथ आपने भी भारतीय इतिहास के चिंतन की दशा-दिशा ठीक करने में अपना सहयोग दिया। हिमाचल के इतिहास का अध्ययन करते हुए आपके मध्य हिमाचल में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति की प्रथम ज्वाला जगाने बाले वीर राम सिंह पठानिया का जब प्रसंग आया तब उनसे प्रभावित होकर हिमाचल में उनके जीवन को जन-जन तक पहुंचाने और एक प्रतीक के रूप मे स्थापित करने के लिए सारा जीवन लगा दिया। इसी का परिणाम नूरपुर में स्थित वजीर राम सिंह पठानिया स्मारक और न्यास था। आपकी दृढ इच्छा-शक्ति और संकल्प से आज वहां पर आई.टी.आई, योगा डिप्लोमा सेंटर जैसे समाज को आत्मनिर्भर बनाने बाले कार्यक्रम चलते हैं। आप लम्बे समय तक इस ट्रस्ट के मुख्य सरंक्षक भी रहे। आप अनुशासन को लेकर कितने कठोर थे, यह तब पता चलता है, जब 87 साल की वृद्ध अवस्था में भी आपने अखिल भारतीय प्रचारक वर्ग में उपस्थित होकर सबको चौंका दिया। आपका स्वर्गवास 14 मार्च 2020 को 93 साल की आयु में हुआ। आप कई कार्यकर्ताओं की न केवल प्रेरणा थे बल्कि स्वयंसेवकों के आदर्श पथ प्रदर्शक भी थे। ◆◆◆

चंबा का समृद्ध लोक गायन मुसाधा

चंचल सरोलवी
सरोल चंबा हिमाचल

चंबा की अनेक विधाओं में से एक है समृद्ध पारंपरिक लोक गायन मुसाधा। मुसाधा गायक, पारंपरिक लोकगीत गाते हुए एक हाथ से खंजरी और दूसरे हाथ से रुबाना (तार वाद्य) बजाता है। मुसाधा लोक गायन में केवल दो कलाकार ही होते हैं। पुरुष कलाकार को 'घुराई' और स्त्री कलाकार को 'घुरैण' कहते हैं। घुराई एक हाथ से खंजरी पर ताल देते हुए तथा दूसरे हाथ से रुबाना (तार वाद्य) से संगीत देते हुए गाता है। घुरैण (स्त्री कलाकार) दोनों हाथों से कंसी बजती हुई गाने में उसका साथ देती है। लोक गायन में धार्मिक प्रसंगों वाली कई लोग गाथाएं गाई जाती हैं जैसे रामायण व महाभारत इत्यादि। लोक गायन की विशेष परंपरा यह है कि जब कोई भी धार्मिक प्रसंग वाली गाथा की चार पंक्तियां गाई जाती हैं तो उसका अनुवाद स्थानीय भाषा में कथा के रूप में किया जाता है, जिसे श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनते हैं।

मुसाधा का आयोजन भगवान शिव के निमित्त, नई फसल होने पर और मांगी गई मुराद, मन्नत पूरी होने पर विशेष रूप में किया जाता है। इसके इलावा घर-घर जाकर मुसाधा गायक अपना गायन सुनाकर नई फसल बधाई के रुप में भी प्राप्त करता है। मुसाधा गायन का आयोजन करने के लिए आयोजक अपनी सुविधा अनुसार एक दिन निश्चित करता है और फिर उस दिन को मुसाधा गायक के साथ अपने पड़ोसी और रिश्तेदारों को भी न्योता देता है। जिस दिन मुसाधा गायन का आयोजन होता है उस दिन सभी लोग शाम को खानपान से निवृत्त होकर एकत्रित होते हैं। जिस स्थान पर मुसाधा का आयोजन किया जाता है, उस स्थान को गाय के गोबर से लीपा जाता है, फिर लोक कलाकारों के हाथ पांव धुलाकर, आसन बिछाकर बिठाया जाता है। आयोजक धूप व दीप जलाकर पांच माणी गेहूं या मक्की (2 किलो सो ग्राम का बना हुआ लकड़ी का डिब्बा जिसे माणी कहते है) भरकर दीप के साथ रखते हैं, इसके साथ अढ़ाई मीटर कपड़ा लगभग 4 सेर आटा चादर तथा कैलाश पर्वत दर्शाने के लिए कहीं पर 84, कहीं पर 36 कहीं पर 64 लड़िया रूई, की कहीं पर फूलों की लंबी मालाओं को गूंथकर छत से लटकाते हैं तथा कभी-कभी भेड़ बकरी भी भेट में देते हैं, पांच माणी अन्न को 'बरसोद' और 10 माणी को 'दस्यूंद' कहते हैं। गाथा की चार पंक्तियां गाने के उपरांत उसका अनुवाद कथा के रूप में किया जाता है। एक व्यक्ति कथा का कुछ अंश सुनने के उपरांत ''जी मेरे महाराज'' कहता रहता है, जिसे 'सकवाई' कहते हैं। उपस्थित जनसमूह भाव विभोर होकर सुनता है और कई नाचने भी लगते हैं। उस माला को उसी छत से बांधकर लटका दिया जाता है अगला आयोजन होने तक। सुबह आयोजक मुसाधा गायकों को अपनी श्रद्धा अनुसार धनराशि भेंट करता है। मुसाधा गायन पूर्ण रूप से धार्मिक परंपराओं से जुड़ा है। घरों की प्रतिष्ठा, मन्नत पूर्ण होने पर तथा समस्त सुखद अनुष्ठान संस्कार,अवसरों पर और नई फसल होने पर शिवपूजन आदि अवसरों पर मुसाथा गायन का आयोजन किया जाता है। परंतु आज विशुद्ध यह लोक संस्कृति की अमूल्य धरोहर लोग गायन 'मुसाधा' दिन प्रतिदिन लुप्त होती जा रही है तथा आज मुसाधा लोक कलाकारों को पेट की खातिर बस स्टैंड, मेलों और पर्यटक स्थलों डलहोजी-खजियार में मनोरंजन करते हुए देखा जा सकता है। इसके संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ी इससे अनभिज्ञ न रह सके।◆◆◆

स्वदेशी कर रही विदेशी तकनीक से मुकाबला

डॉ. उमेश मोदगिल

ARATTAI ULAA E-MAIL MAPIFY

स्वदेशी पर आत्म निर्भरता का विचार केवल आर्थिक नहीं बल्कि हमारी राष्ट्रीय भावना और गौरव का प्रतीक है जब हम भारतवासी स्वदेशी उत्पादों, तकनीक और नवाचारों को अपनाते हैं तो वह केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्र के प्रति सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। आज हर स्मार्टफोन में गूगल जैसी विदेशी कंपनी की सेवाएं लगभग अनिवार्य रूप से शामिल हो गई हैं। यदि कल कहीं ऐसा हो जाए कि यह कंपनियां अपनी सेवाओं का उपयोग एक तरफा निर्णय से भारत में बंद कर दें, तो क्या होगा, यह कल्पना करना भी डराने वाला है। इससे सरकारी व निजी संस्थाओं के संचालन और डिजिटल अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ सकता है। गूगल की सेवाओं के चलते डेटा सुरक्षा, डिजिटल आत्मनिर्भरता व तकनीकी नियंत्रण में चुनौतियों का सामना तो हमें करना पड़ ही रहा है, ऐसे में जरूरत है स्वदेशी तकनीक की, जो आज हमारे पास उपलब्ध है। आवश्यकता है उनके उपयोग करने की भारत के पास गूगल क्रोम, गूगल मैप, व्हाट्सएप, टेलीग्राम और गूगल मेल जैसी तकनीक को स्वदेशी विकल्प के रूप में ULAA, mapmyindia, Arattai व Zoho मेल उपलब्ध है।

जोहो (Zoho) एक प्रमुख भारतीय सॉफ्टवेयर कंपनी है, इसके दो उत्पाद-जोहो मैसेंजर अरत्तई (Arattai)-व्हाट्सएप, जीमेल, टेलीग्राम जैसी वैश्विक कंपनियों को टक्कर दे रहे हैं। खास बात यह है कि जोहो मेल में 73 भाषाओं के विकल्प हैं। इसमें संस्कृत के अलावा भारत की कई क्षेत्रीय भाषाएं जैसे-मैथिली और मराठी भी शामिल हैं। उपयोगकर्ता मेल की सेटिंग में जाकर भाषा बदल सकते हैं। जोहो मेल को भारत सरकार ने लगभग 12 लाख केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की ईमेल सेवा के लिए अनिवार्य कर दिया है। यह बदलाव आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत डिजिटल सुरक्षा, डेटा निजता और स्वदेशी तकनीक को बढ़ावा देने के लिए किया गया है।

श्रीधर वेम्बू जोहो के सह-संस्थापक और सीईओ हैं। उन्होंने 1996 में जोहो की स्थापना की, श्रीधर वेम्बू का कहना है कि कंपनी का बिजनेस, मॉडल डेटा प्राइवेसी पर आधारित है और यूजर का डेटा मार्केटिंग के लिए उपयोग नहीं किया जाता। जोहो मेल पूरी तरह से सुरक्षित और भरोसेमंद है। इसे भारतीय सरकारी संस्थानों की आवश्यकताओं के अनुसार डिजाइन किया गया है। जोहो मेल में एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन, स्पैम फिल्टर, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन जैसे सुरक्षा फीचर्स के साथ विज्ञापन-मुक्त इनबॉक्स, बड़े अटैचमेंट भेजने की सुविधा, टीम के लिए स्ट्रीम्स, कैलेंडर और नोट्स जैसे उपकरण इसे सरकारी और कॉर्पोरेट उपयोग के लिए आदर्श बनाते हैं। टीम वर्क को सरल बनाने के लिए इसमें सोशल मीडिया जैसे फीचर्स हैं, जहां यूजर पोस्ट बना सकते हैं, टास्क असाइन कर सकते हैं और टीम से संवाद कर सकते हैं। इसमें भेजे गए ईमेल को कुछ समय के भीतर वापस लेने की भी सुविधा है।

जोहो का मैसेंजर एप 'अरत्तई' कम इंटरनेट स्पीड और लो-बैंडविड्थ क्षेत्रों के लिए डिजाइन किया गया है। अरत्तई तमिल शब्द 'कैजुअल चैट' से लिया गया है, जो व्हाट्सएप को कड़ी टक्कर दे रहा है। अरत्तई में नवंबर 2025 से टेक्स्ट मैसेजिंग पर भी एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन सुरक्षा सुविधा उपलब्ध होगी, जो यूजर्स की निजता को सुनिश्चित करेगी। एंड्रॉइड टीवी सपोर्ट फीचर यूजर्स को बडी स्क्रीन पर मैसेजिंग और कॉलिंग का अनुभव देता है, जो व्हाट्सएप में अभी तक नहीं है। जोहो का ब्राउजर क्रोम को टक्कर दे रहा है। इस भारतीय ब्राउजर को 'प्राइवेसी-फर्स्ट' बताया गया है, जो इसे एक सुरक्षित विकल्प बनाता है। यह बिल्ट-इन एड ब्लॉकर व सभी डिवाइसों पर सिंक होने जैसी सुविधाएं देता है। जोहो मेल, अरत्तई और Ulaa सेवाएं, आत्मनिर्भर भारत अभियान का हिस्सा है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सटीकता और अपडेटेड डेटा गूगल से काफी आगे है, आज स्वदेशी तकनीक और दृढ़ दृष्टि के साथ MapmyIndia सिर्फ एक ब्रांड नहीं, बल्कि 'भारत की तकनीकी आत्मनिर्भर स्वदेशी विकास यात्रा' का प्रतीक बन चुका है। इसे जरूर अपनाएं। ◆◆◆

नागरिक कर्तव्यों के निर्वाहन से ही राष्ट्र की उन्नति संभव

प्रहलाद सबनानी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा पंच परिवर्तन नामक कार्यक्रम को समाज के बीच ले जाने का प्रयास बड़े उत्साह से किया जा रहा है। पंच परिवर्तन कार्यक्रम में 5 बिंदु शामिल हैं – नागरिक कर्तव्य, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, समरसता एवं स्व के भाव का जागरण। इसमें स्वदेशी अर्थात् देश में निर्मित उत्पादों का उपयोग भी शामिल है। इन 5 आयामों के माध्यम से समाज परिवर्तन के कार्य को गति देने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें भारतीय नागरिकों को अपने नागरिक कर्तव्यों के अनुपालन पर भी विशेष ध्यान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। देश के कानूनों का पालन करना और उनका सम्मान करना नागरिकों की जिम्मेदारी है। इस कर्तव्य को पूरा करने से समुदाय में अनुशासन और सुरक्षा की भावना पैदा होती है। दैनिक जीवन के छोटे-छोटे नियमों का पालन करने से सामाजिक अनुशासन का विकास होता है। जैसे, यातायात नियमों का पालन करना। जहां आवश्यक हो वहां वाहन कतार में लगाना आदि।

नागरिक कर्तव्य के अंतर्गत नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे विभिन्न करों का भुगतान समय पर करें एवं सही राशि का भुगतान करें। यह देश की आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक है। यदि समस्त नागरिक अपने इस कर्तव्य का पालन करते हैं तो भारत में करों की दरों को निश्चित ही और अधिक नीचे लाया जा सकता है। इसी प्रकार, राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा एवं रखरखाव करना भी नागरिकों का परम कर्तव्य है, जैसे सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता बनाए रखना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना। कभी-कभी आम जनता को गुमराह कर आंदोलन हिंसक रूप लेते नजर आते हैं एवं परिणामस्वरूप देश में आगजनी, लूटपाट और राष्ट्रीय सम्पदा की हानि देखने को मिलती है। इस सम्बंध में समाज में जागरूकता पैदा किए जाने की आज सख्त आवश्यकता है।

वैसे भी लोकतंत्र की सफलता और स्थिरता नागरिकों की भागीदारी और कर्तव्यों के प्रति सजगता पर निर्भर करती हैं। जब नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील होते हैं और उनका ईमानदारी से पालन करते हैं तो समाज में सकारात्मक बदलाव आते हैं और देश के आर्थिक विकास की गति तेज होती है। समाज की प्रगति, सुरक्षा और समृद्धि के लिए नागरिकों की अपने कर्तव्यों प्रति संवेदनशीलता तथा कटिबद्धता आवश्यक है। देशभक्ति न केवल अपने देश के प्रति प्रेम और निष्ठा है, बल्कि अपने देश के उत्थान और सुरक्षा में योगदान भी है। एक देशभक्त नागरिक अपने नागरिक कर्तव्यों के प्रति सदैव संवेदनशील एवं जागरूक रहता है। नागरिक एवं सामाजिक अनुशासन का पालन करना ही स्वतंत्र देश में प्रतिदिन प्रकट होने वाली देशभक्ति है।

नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों में मुख्य रूप से शामिल है, संविधान का पालन करना एवं उसके आदर्शों और संस्थाओं, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना। जिसने हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को जन्म दिया प्रेरित होने पर उन ऊंचे आदर्शों को विकसित करना और उनका पालन करना। भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता उनका रख-रखाव एवं संरक्षण करना। देश की रक्षा करना और आह्वान किए जाने पर राष्ट्रीय सेवा करना। धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय या वर्ग मतभेदों को पार करना, भारत के लोगों के बीच एकता और भाईचारे को बढ़ावा देना, महिलाओं की गरिमा को कम करने वाली प्रथाओं को त्यागना। हमारी विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत की सराहना करना और इसे बचाना। वनों, झीलों, नदियों, वन्य जीवों और प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना, जीवित प्राणियों के प्रति दया दिखाना। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद, जिज्ञासा और सुधरवाद का विकास करना। सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करना एवं हिंसा का कठोर त्याग करना। देश में ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग करना एवं सनातन संस्कृति के संस्कारों का अनुपालन करना।

भारत के समस्त नागरिक यदि उक्त मौलिक कर्तव्यों का अनुपालन करते हैं तो भारत की आर्थिक विकास दर को 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष के ऊपर ले जाने में किसी प्रकार की अन्य कठिनाई आने वाली नहीं है। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें अपनी ओर से देश के लिए हितकारी आर्थिक नीतियां बनाने की पूरी कोशिश कर रही हैं परंतु भारतीय नागरिक होने के नाते हमें भी अपने नागरिक कर्तव्यों का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा, तभी हम मिलकर मां भारती को एक बार पुन: विश्व गुरु के रूप में आरूढ़ कर पाएंगे।◆◆◆

सेब की बंपर पैदावार से किन्नौर सर्वश्रेष्ठ उत्पादक

हिमाचल प्रदेश में इस वर्ष सेबों की जोरदार पैदावार ने किन्नौर को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ सेब उत्पादक क्षेत्रों में से एक बना दिया है। बागवानी विभाग के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार पिछले साल के रिकॉर्ड उत्पादन से थोड़ी गिरावट के बावजूद इस साल 33,53,089 सेब पेटियों की पैदावार हुई। सेब देश भर के 11 प्रमुख सेब बाज़ारों में 12,671 वाहनों के माध्यम से पहुंचाए गए। किन्नौर के कुरकुरे, रसीले और सुगंधित सेबों ने एक बार फिर उपभोक्ताओं और व्यापारियों दोनों को खुश किया है। अपनी प्राकृतिक मिठास, अनोखे स्वाद और लंबी शेल्फ लाइफ के लिए जाने जाने वाले किन्नौर के सेबों की तुलना अक्सर यूरोप और अमेरिका की प्रीमियम किस्मों से की जाती है।

बागवानी विभाग के उप निदेशक डॉ. भूपेंद्र नेगी ने बताया कि कल्पा ब्लॉक ने 10,27,673 पेटियों का उत्पादन किया, जबकि निचार ब्लॉक ने 10,96,093 पेटियों का और पूह ब्लॉक ने 12,29,322 पेटियों के साथ सबसे आगे रहा। सेबों को दिल्ली, मुंबई, चंडीगढ़, पिंजौर, सोलन, शिमला, रतनपुर, बिथल, मतियाना, सैंज और खेगसू सहित प्रमुख बाजारों में भेजा गया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रसिद्ध किन्नौरी स्वाद भारत के हर कोने तक पहुंचे। इनमें से दिल्ली को 10 लाख से ज़्यादा पेटियाँ, मुंबई को चार लाख से ज़्यादा और बिथल को 4.8 लाख से ज़्यादा पेटियाँ मिलीं। अपने कुरकुरेपन, गहरे लाल रंग और खुशबू के लिए प्रसिद्ध किन्नौर के सेब इन बाजारों में अभी भी अच्छी कीमतों पर बिक रहे हैं। उन्होंने बताया कि चौरा सेब निरीक्षण बैरियर बंद होने के साथ ही परिवहन सीजन का औपचारिक अंत हो जाएगा।◆◆◆

हिमाचल में तैयार होगी विदेशी सेब की नई वैरायटी

हिमाचल के सेब बागबानों को बेहतरीन किस्म के पौधे देने के लिए उद्यान विभाग नई तकनीक के साथ काम कर रहा है। उद्यान विभाग हाल ही में इटली और यूएसए की सबसे बेहतरीन किस्म के सेब के पौधे लाया हैं। इसमें गाला, गेनसमित व फियूजी जैसी किस्म के पौधे हैं। इन पौधों से बेहतरीन फसल कैसे पाई जा सकती है। इसको लेकर उद्यान विभाग बागबानों की पूरी मदद करने जा रहा है। इसके लिए एक क्यूआर कोड भी उद्यान विभाग ने लॉन्च किया है। इस क्यूआर कोड को स्कैन कर बागबान इन पौधों को लगाने और इनकी देखरेख के साथ अच्छी फसल लगाने की पूरी जानकारी दी गई हैं, जो इन किस्मों के पौधे लग जाते हैं उन्हें उद्यान विभाग रजिस्टर भी कर रहा है, ताकि जो भी इन पौधों को ले जाता है, तो उन्हें विभाग के विशेषज्ञ पूरी जानकारी देंगे और सही प्लांट देंगे साथ ही बताएंगे कि किस तरह से और कब पौधा रोपण करना हैं। इसकी पूरी फीडबैक भी बागबान देगा। पौधों को ऊंचाई वाले क्षेत्रों में लगाया जा सकता है। इसमें बागबान विश्व बैंक पोषित परियोजना के तहत लाभ देगा।

लवी मेले में सजी प्रदर्शनी : इन पौधों के बारे में जानकारी देने और इन पौधों की सही जानकारी देने के लिए विभाग ने रामपुर लवी मेले में प्रदर्शनी भी लगाई है। उपनिदेशक उद्यान विभाग जिला शिमला डा. सुदर्शना नेगी के मार्गदर्शन में तथा विषय विशेषज्ञ डा. संजय कुमार चौहान के नेतृत्व में तैयार की गई इस प्रदर्शनी में फलों की उत्कृष्ट प्रजातियों, नवीन बागबानी तकनीकों और विभागीय योजनाओं की जानकारी मिल रही है। विभाग ने इस बार सीखो और सांझा करो (स्कैन एंड शेयर अनुभव) नामक एक अनूठी पहल भी शुरू की है। इसमें आगंतुक और बागबान अपने अनुभव और सफलताओं को मोबाइल के माध्यम से सांझा कर सकते हैं, ताकि दूसरे किसान भी उनसे प्रेरणा ले सकें। बागबानों ने बताया कि इस तरह की जानकारी से उन्हें न सिर्फ योजनाओं की जानकारी मिलती है, बल्कि वे मौसम, मिट्टी और पौध प्रबंधन को लेकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।◆◆◆

बचपन के निशां

ससुराल से पीहर आना, बचपन की यादों में
खो जाना अच्छा लगता है।
यही तो एक जगह है, जहाँ मेरा
मुझसे मिलन होता है।
आते ही सबसे पहले दरवाजे पर
अपने नन्हें पैरों के निशां खोजती हूँ।
यही दहलीज तो मायके और
ससुराल के बीच की रेखा है।
जो मां और ममता के आंचल की छांव देती है ।
फिर सब का हालचाल जान, बस थोडा सा सुस्ता कर
कभी माँ की अलमारी यूँ ही बेवजह टटोलती हूँ
करीने से सजाई हुई गुड़िया में अपना बचपन जी लेती हूं।
कपड़ों के ढेर में दबी स्कूल की ड्रेस मुझे देख कर मुस्कुरा देती है
कुछ चाहिए तुझे, पूछने पर न में गर्दन हिला देती हूँ।
घर के हर एक कोने को घूम-घूम फिर से देखती हूँ।
मायके की बहुत सारी यादें समेटे, बचपन की अल्हड खुशियां लपेटे
ममता दुलार की चुनरी ओढे भारी मन से अपने घर लौट आती हूं।
...थोड़े वक्त के लिए ही सही, मायके में अपने निशाँ ढूंढती हूँ।

शीतल शर्मा व्यास

अब भी वक्त है संभल जाओ

जब अपने ही अपने का रस्ता रोकने लगे,
तो सपनों के दीपक भी झिलमिलने लगे।
जहाँ कभी मिलकर दिल धड़कते थे,
वहाँ अब मतभेदों के बादल गहराने लगे।
हम वो वंश हैं, जहाँ शौर्य पलता रहा,
पृथ्वीराज की वीरता गगन छूता रहा।
एक तलवार थी जो सौ दुश्मन काटती,
पर बँटवारे की आग में देश जलता रहा।
महाराणा प्रताप ने जंगलों में हुंकार भरी,
स्वाभिमान, भूख से बड़ा है यह सिखाया।
घास की रोटियां खाईं मगर झुके नहीं,
प्रताप की मिट्टी में आज भी वो तेज़ है,
जिसने कहा, हर भारतवासी में मेरा देश है।
अब भी वक्त है ज़रा संभल जाओ,
जातिवाद की दीवारें खुद गिराओ।
जो 'मैं' में डूबा, वो खो गया,
जो 'हम' में जिया, वो अमर कहलाओ।
उठो भारत के सपूतो, प्रण करो,
पृथ्वीराज, प्रताप, शिवाजी को याद करो।
एकता की मशाल फिर से जलाओ,
अपने कर्म से भारत को आबाद करो।
हम वो हैं जो मिट्टी से सोना बनाते हैं,
कर्म और प्रेम से भारत सजाते हैं।
नफ़रत की आग को अब बुझा दो,
देश की डोरी फिर थाम लो, हाथ बढ़ा दो।

चेतन चौहान, कमलानगर, संजौली, शिमला।

एकता का उद्‌गार

विचारों की उछल कूद नहीं है
विवेकानंद हमारे संस्कार
जाति पाति के बंधन तोड़े
सबका स्वागत हमारे द्वार
क्षेत्रवाद पर हो कड़ा प्रहार
एक भारत का सपना हो साकार
संघर्ष का शंखनाद भी है
स्वीकार मन मस्तिष्क में
वीणा की झंकार
स्पष्ट नीति और स्पष्ट विचार
एक ध्वज और एक परिवार
अपना तो सबसे नाता है
सबका हम पर है अधिकार।

प्रदीप भारद्वाज, मंडी

इस्लामी देशों को जोड़ने के लिए गिड़गिड़ा रहा पाकिस्तान

भारत की सामरिक ताकत से घबराया

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान इस्लामी देशों में सामरिक गठजोड़ बनाने की योजना में लगा है। कतर सम्मेलन में पाक और मिस्र ने इस्लामी नाटो बनाने का प्रस्ताव रखा। शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख आसिम मुनीर की सऊदी यात्रा में समझौते किए गए, जो आपसी सुरक्षा और सामूहिक रक्षा सुनिश्चित करेंगे।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान इस्लामी देशों के बीच एक सामरिक गठजोड़ बनाने की साजिश में जुटा है। उसकी कोशिश है कि भारत के खिलाफ जारी असिमित युद्ध में इस इस्लामी गठजोड़ का इस्तेमाल किया जाए। साथ ही भारत की सैन्य कार्रवाई की सूरत में यह गठजोड़ उसकी सुरक्षा गारंटी या सामूहिक रक्षा ढाल के तौर पर काम करे। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान के सैन्य, राजनीतिक और खुफिया नेतृत्व ने कई इस्लामी देशों की यात्राएं की हैं। 9 सितंबर को करीब 60 मुस्लिम देश कतर में इजराइल के खिलाफ एक आपात शिखर सम्मेलन में एकजुट हुए। इसमें पाकिस्तान और मिस्र ने इस्लामी नाटो या संयुक्त इस्लामी सैन्य बल बनाने का प्रस्ताव रखा। पाक पीएम शाहबाज शरीफ ने इसके गठन की जोरदार वकालत की। यह सम्मेलन भले इस्राइल के मसले पर था, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर में पिटने के बाद पाक की निगाह इस्लामी नाटो के बहाने भारत की कार्रवाई से बचने पर लगी थीं।

शहबीज शरीफ और मुनीर की सऊदी यात्रा का कनेक्शन ?

कतर के सम्मेलन के चंद दिन बाद ही शहबाज शरीफ और पाक सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने सऊदी अरब की यात्रा की। इस दौरान हुए सामरिक समझौते में कहा गया है कि दोनों में से किसी भी देश के विरुद्ध हमला दोनों देशों के विरुद्ध माना जाएगा। इससे ठीक पहले पाक के विदेश मंत्री इशाक डार ने अपनी ढाका यात्रा के दौरान बांग्लादेश से 6 समझौते किए। अक्तूबर में आसिम मुनीर ने मिस्र, जॉर्डन और सऊदी अरब की यात्रा की। इन यात्राओं में इन देशों के सैन्य प्रमुखों से मुलाकात के दौरान रक्षा सहयोग बढ़ाने और खुफिया जानकारी साझा करने वाले समझौते हुए। इधर तुर्किये के रक्षा मंत्री यासर गुलेर ने जुलाई में क्षेत्रीय सुरक्षा पर चर्चा के लिए पाकिस्तान का दौरा किया था। जबकि अगस्त में शहबाज शरीफ ने तुर्किये के राष्ट्रपति रजब तैयब अर्दोआन से मुलाकात की। इन सभी यात्राओं का उद्देश्य सैन्य कूटनीति मजबूत करना था।

पाक-तुर्किये-अजरबैजान का त्रिकोण : मई में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान तुर्किए ने पाकिस्तान का पुरजोर साथ दिया। जुलाई में दोनों देशों ने लगभग 900 मिलियन डॉलर के रक्षा सौदे किए। तुर्किये पाक को अपने उन्नत बायराक्तार टीबी2 और अकिनसी ड्रोन देगा। इधर पाकिस्तान के अजरबैजान से भी रक्षा संबंध तेजी से प्रगाढ़ हुए हैं। हाल ही में हुए एक रक्षा सौदे के तहत अजरबैजान पाकिस्तान से जेएफ-17 थंडर लड़ाकू विमान खरीदेगा। कुल 4.6 बिलियन डॉलर का यह सौदा पाकिस्तान के इतिहास का सबसे बड़ा रक्षा निर्यात सौदा है।

पाकिस्तान अकेला नहीं यह दिखाने की कोशिश

विदेश मामलों के जाने माने विशेषज्ञ कमर आगा ने कहा कि यह भारत के लिए बड़ी चिंता की बात है। तुर्किये, अजरबैजान और जॉर्डन पाकिस्तान के विश्वस्त साझेदार हैं, इसलिए भारत विरोधी बन सकते हैं। यह गठजोड़ ये दिखाने की कोशिश है कि पाकिस्तान अकेला नहीं है, लिहाजा भारत को उस पर हमले के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हालांकि यह अमेरिका की शह पर ही हो रहा है। तुर्किये नाटो का भाग है, जबकि जॉर्डन भी हर तरह से अमेरिका पर निर्भर है। अजरबैजान तुर्किये पर निर्भर है। यदि भारत कोई बड़ा हमला करे तो यह सारे देश पाकिस्तान को हथियार सौंप सकते हैं। वहीं रक्षा विशेषज्ञ मेजर जनरल जीडी बख्शी ने कहा कि पाकिस्तान हमें तंग करने की पूरी कोशिश कर रहा है। आतंकी ठिकानों को नष्ट करने के लिए कठोर कार्यवाही होगी, इसीलिए त्रिशूल का अभ्यास चल रहा है। भारत दिल्ली ब्लास्ट का बदला जरूर लेकर रहेगा, ऐसा नए भारत का विश्वास है। ◆◆◆

देश ने खोया बहादुर विंग कमांडर नमांश स्याल

नमांश स्याल भारतीय वायुसेना के एक होनहार और बहादुर विंग कमांडर थे, जो दुबई एयर शो के दौरान तेजस लड़ाकू विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से 21 नवंबर 2025 को शहीद हो गए। उनकी शहादत से न केवल उनके परिवार को बल्कि पूरे देश को गहरे आघात पहुँचाया। उनके जीवन में बचपन से ही देशभक्ति और आसमान की दुनिया को जीतने की चाह थी, और वे अपने देश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध थे। उनकी अंतिम विदाई बड़े राजकीय सम्मान के साथ उनके पैतृक गांव कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में की गई, जहां पूरा गांव मातम में डूबा हुआ था। नमांश स्याल की पत्नी वायुसेना में कार्यरत हैं और उनकी एक बेटी है। उनकी शहादत ने सैन्य जीवन की कठोर सच्चाई को उजागर किया है कि यह जीवन कितना जोखिम भरा और त्यागपूर्ण होता है। नमांश स्याल विंग कमांडर थे, दुबई एयर शो में तेजस विमान दुर्घटना में वीरगति को प्राप्त हो गए। केंद्र सरकार द्वारा तेजस हादसे की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। शीघ्र ही संयोग या प्रयोग अथवा हादसा इसके तथ्य सामने आएंगे। रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि एक बहादुर विंग कमांडर के बलिदान से देश को बड़ा आघात होता है, क्योंकि एक कमांडर के बनने - बनाने में कई सालों की मेहनत लगती है। ◆◆◆

देश में नई श्रम कानून लागू

- सभी कामगारों को समय से न्यूनतम वेतन की गारंटी
- युवाओं को नियुक्ति पत्र की गारंटी
- महिलाओं को समान वेतन व सम्मान की गारंटी
- 40 करोड़ श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा गारंटी
- फिक्स टर्म एम्प्लॉईस को एक साल बाद ग्रेच्युटी की गारंटी
- 40 साल से अधिक आयु वाले श्रमिकों को सालाना मुफ़्त हेल्थ चेक-अप की गारंटी
- ओवरटाइम करने पर दोगुने वेतन की गारंटी
- जोखिम-भरे क्षेत्रों के कामगारों को 100 प्रतिशत हेल्थ सिक्युरिटी की गारंटी
- इंटरनेशनल मानकों के मुताबिक श्रमिकों को सामाजिक न्याय की गारंटी यह सुधार सिर्फ बदलाव भर नहीं बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा श्रमवीरों के कल्याण के लिए लिया गया एक ऐतिहासिक निर्णय है।◆◆◆

भारतीय ब्लाइंड महिला क्रिकेट टीम ने जीता टी20 वर्ल्ड कप

भारतीय ब्लाइंड महिला टीम ने टी20 वर्ल्ड कप जीत कर इतिहास रच दिया। श्रीलंका में खेले गए उद्घाटन ब्लाइंड महिला टी20 वर्ल्ड कप के खिताब पर कब्जा जमाया। कोलंबो के पी सारा ओवल में खेले गए फाइनल में नेपाल को सात विकेट से हराकर इंडिया ने पहला ब्लाइंड विमेंस टी20 वर्ल्ड कप अपने नाम किया। इंडिया ने पहले बॉलिंग करते हुए नेपाल को पांच विकेट पर 114 रन पर रोक दिया। इसके बाद फिर सिर्फ 12 ओवर में तीन विकेट पर 117 रन बनाकर खिताब जीत लिया। रन चेज में इंडिया के लिए फूला सरेन ने सबसे ज्यादा नाबाद 44 रन बनाए।

नेपाल लगा सका मात्र एक बाउंड्री

इंडिया का दबदबा इतना था कि उसकी विरोधी टीम अपनी पारी में सिर्फ एक बाउंड्री ही लगा पाई। इंडिया ने पहले सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराया था, जबकि नेपाल ने पाकिस्तान के खिलाफ जीत हासिल की थी।◆◆◆

सनातन की एकता का आदर्श शिव परिवार

भगवान महादेव हिंदू धर्म दर्शन और संस्कृति में सर्वमान्य आराध्य देव हैं। शिव परिवार में स्वयं भगवान शिव, माता पार्वती, पुत्र श्री गणेश और कार्तिक की पूजा-अर्चना किए जाने का विधान है। हिंदू धर्म एवं संस्कृति में शिव परिवार एकता का सर्वोच्च आदर्श है। भगवान शिव के गले में नाग विराजमान है। भगवती पार्वती का वाहन शेर है। श्री गणेश का वाहन चूहा है और श्री कार्तिकेय भगवान का वाहन मोर है। अद्भुत बात यह है कि मोर सांप को खाने वाला है, सांप चूहे को खाने वाला है और सिंह सांप, चूहा, मोर इन सभी का शिकार करने वाला है। परंतु शिव परिवार के इन वाहनों की विशेषता यह है कि ये सभी एक दूसरे के शत्रु होते हुए भी एक परिवार में रहकर एकता का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह भारतीय संस्कृति में कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ग एक दूसरे के पूरक होते हुए सदियों से समाज में सुखपूर्वक रहते चले आए हैं। वर्तमान हिंदू समाज में भी विभिन्न वर्ग जातियां और समुदाय एक दूसरे के साथ सद्भावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में रह रहे हैं। कुछ राजनीतिक षड्यंत्र हिंदुओं को जातियों में बांटकर लड़ाने का षड्यंत्र रच रहे हैं। जबकि अन्य मत पंथों में भी विभिन्न जातियां हैं लेकिन जातीय जनगणना के लिए उनका जिक्र नहीं होता है केवल हिंदुओं को ही बांटने की बात की जाती है। कभी जातीय जनगणना के आधार पर, कभी चुनाव में किसी एक जाति विशेष को अपना वोट बैंक बनाए जाने के कारण, जातिवाद के माध्यम से समाज में वैमनस्य पैदा होता आया है। अत: जिस तरह शिव परिवार विभिन्नता होते हुए भी एक होकर सुखपूर्वक रहता है। इसी तरह हिंदू जातियों को भी एक दूसरे के सुख-दुख में सामाजिक सौहार्द को कायम रखते हुए साथ रहने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी यह समाज व्यवस्था सुदृढ़ हो सकेगी और देश चुनौतियों का सामना कर सकेंगे◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. भारत की सबसे बड़ी आवासी इमारत कौन सी है ?
2. विदेशों में भारतीय झंडा फहराने वाली प्रथम महिला कौन थी ?
3. भारत के अणु विज्ञान के जनक कौन थे ?
4. संस्कृत भाषा में बनी पहली फिल्म कौन सी है ?
5. भारत के प्रथम मेट्रो रेल कहां चलाई गई ?
6. महात्मा बुद्ध किस राजवंश से संबंधित थे ?
7. गुलाम वंश का अंत किसने किया ?
8. हिमाचल में टारना मण्डी कहां स्थित है ?
9. हिमाचल के गांधी किसे कहा जाता है ?
10. केन्द्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र कहां है ?
11. राम राज्याभिषेक का प्रसंग रामचरित मानस के किस कांड में है ?

उत्तर : 1. राष्ट्रपति भवन दिल्ली 2. मैडम भीकाजी कामा , 3. होमी जहांगीर भाया 4. शंकराचार्य 5. कोलकाता 6. शाक्य 7. जलालुद्दीन खिलजी 8. मण्डी 9. बाबा कांशीराम, 10. शिमला 11. उत्तरकांड

हिमाचल की वीरांगना परसो देवी

भारत की आज़ादी की कहानी सिर्फ पुरुषों की नहीं, बल्कि उन निडर नारियों की भी है, जिन्होंने हिमाचल की धरती से स्वतंत्रता की लौ जलाए रखी। आज से हम सीरीज़ में बात करेंगे हिमाचल की आज़ादी की वीरांगनाओं की।

परसो देवी जी कांगड़ा क्षेत्र की प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलनों में भाग लिया और कई बार जेल गईं। वे महिला जागरण और शिक्षा के प्रसार में भी सक्रिय रहीं। ब्रिटिश हुकूमत के समय जब लोग डर के साए में जी रहे थे, तब परसो देवी ने खुलकर आवाज़ उठाई। उन्होंने अपने गाँव और आस-पास के इलाकों में जाकर महिलाओं को जागरूक किया बताया कि अब चुप रहने का समय नहीं, बल्कि अपने हक़ के लिए लड़ने का समय है।

जब भारत छोड़ो आंदोलन और प्रजामंडल आंदोलन जैसी लहरें हिमाचल तक पहुँचीं, तो परसो देवी ने इन आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया।वे ब्रिटिश पुलिस के डर से पीछे नहीं हटीं कई बार गिरफ्तार हुईं, लेकिन उनका हौसला कभी नहीं टूटा। जेल से लौटकर भी उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने और समाज में राष्ट्रीय चेतना फैलाने का काम जारी रखा। परसो देवी जी सिर्फ़ एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं थीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण की मिसाल भी थीं।

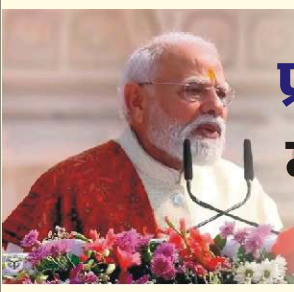

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने श्री राम मंदिर के शिखर पर फहराया धर्म ध्वज

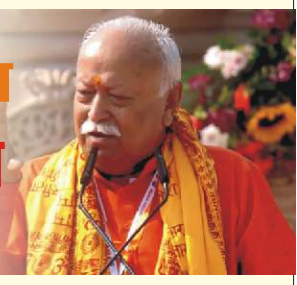

राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रहे उपस्थित

अयोध्या में राम मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजारोहण के बाद अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा-

'आज सदियों के घाव भर रहे हैं। सदियों की वेदना विराम पा रही है और संकल्प सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। राम मंदिर के शिखर पर फहरा रहा ये ध्वज भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का 'ध्वज' है। यह ध्वज सदियों से चले आ रहे सपनों का साकार स्वरूप है।' यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। 500 वर्षों का इंतजार खत्म हुआ। अयोध्या में बने भव्य श्री राम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर भगवा लहरा गया। अगर भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है तो हमें अपने अंदर राम को जगाना होगा। अपने भीतर के राम की प्राण प्रतिष्ठा करनी होगी। इस संकल्प के लिए आज से बड़ा सुअवसर कोई नहीं हो सकता। इसलिए, हम संकल्प लें कि अपने भीतर राम जगाएंगे। आज पूरा भारत, पूरा विश्व राम-मय है। हर राम भक्त के दिल में अद्वितीय संतोष है। असीम कृतज्ञता है। अपार अलौकिक आनंद है। आज उस यज्ञ की पूर्णाहुति है, जिसकी अग्नि 500 साल तक प्रज्वलित रही। आज भगवान राम की ऊर्जा भव्य राम मंदिर के शिखर पर इस धर्म ध्वजा के रूप में स्थापित है।'

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

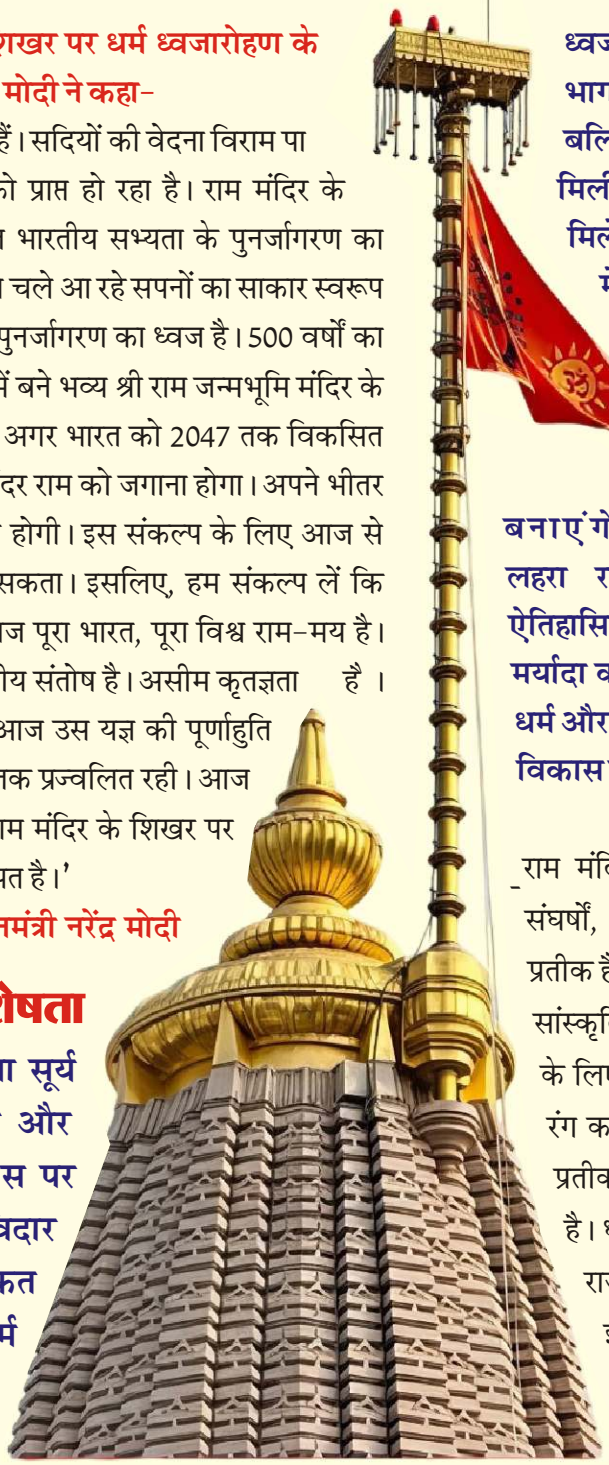

धर्म ध्वज की विशेषता

धर्म ध्वज पर उकेरा गया सूर्य भगवान श्रीराम के तेज और वीरता का प्रतीक है। इस पर ॐ का चिन्ह और कोविदार वृक्ष की आकृति भी अंकित है। त्रिभुजाकार की धर्म ध्वजा की ऊंचाई 11 फुट लंबाई 22 फुट है।

ध्वजारोहण कार्यक्रम में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा, 'राम मंदिर के जिन लोगों ने बलिदान दिया, आज उनकी आत्मा को शांति मिली होगी। वहां अशोक सिंघल जी को शांति मिलेगी। ध्वज एक प्रतीक होता है। मंदिर के रूप में हमने कुछ तत्वों को ऊपर पहुंचाया है। सारा विश्व इससे ठीक चलेगा।'

- मोहन भागवत

राम लला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे, आज अयोध्या में धर्म ध्वज लहरा रहा है। देश की जनता आज इस ऐतिहासिक पल की गवाह बन रही है। धर्म और मर्यादा का प्रतीक है। राम मंदिर का ध्वज। यह ध्वज धर्म और मर्यादा दोनों का प्रतीक है। देश ने अयोध्या में विकास देखा और आज उसके उत्सव का दिन है।

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

राम मंदिर के शिखर पर लहराता केसरिया ध्वज उन संघर्षों, बलिदानों और भक्तों की अविचल श्रद्धा का प्रतीक है, जो पीढ़ियों तक चली। यह क्षण धर्म, सत्य और सांस्कृतिक गौरव की विजय का प्रतीक होगा। राम मंदिर के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया ध्वज केसरिया रंग का है, जिसे हिंदू धर्म में त्याग, तप और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। इस पर सूर्य देव का चिन्ह अंकित है। ध्वज आरोहण कार्यक्रम में हजारों विशिष्ट व्यक्ति, राजनेता, समाज सेवक और धर्माचार्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भी अयोध्या जी धाम में प्रतिष्ठित भगवान श्री राम की पूजा-अर्चना करके पुण्य लाभ अर्जित किया।◆◆◆

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम् फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम् सुखदां वरदां मातरम्॥
वन्दे मातरम्
सप्त-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
द्विसप्त-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अवला केन मा एत वले
वहुवलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥ वन्दे मातरम्
तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे॥
वन्दे मातरम्
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम् नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम् सुजलां सुफलाम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्॥ वन्दे मातरम्

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :